रांची, गुरुवार
15.08.2024
वर्ष : 9, अंक : 255 पृष्ठ : 12
मूल्य : दो रूपए

बिहान भारत

रांची से प्रकाशित हिन्दी दैनिक
खबरे हमारी, विश्वास आपका

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

website : www.bihanbharat.org | bihanbharat@gmail.com | @bihan_bharat | Bihan Bharat | RNI NO - JHAHIN/2015/73988

झारखण्ड सरकार
GOVERNMENT OF JHARKHAND

समस्त प्रदेश एवं देशवासियों को

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

मैं स्वतंत्र हूँ, पढ़ाई के छोटे-मोटे खर्चों से, मुझे मिला **सावित्रीबाई फुले किशोरी समृद्धि योजना का लाभ**

मैं स्वतंत्र हूँ, विदेश में उच्च शिक्षा के लिए, मुझे मिला **मरङ गोमके जयपाल सिंह मुंडा पारदेशीय छात्रवृत्ति योजना का लाभ**

मैं स्वतंत्र हूँ, रोजमर्रा की आर्थिक परेशानी से, मेरा **झारखण्ड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना में हुआ निबंधन**

मैं स्वतंत्र हूँ, **पलाश ब्रांड** ने मुझे दिया आर्थिक स्वावलंबन

मैं स्वतंत्र हूँ, उच्च/तकनीकी शिक्षा के लिए, मुझे मिला **गुरुजी स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड योजना का लाभ**

मैं स्वतंत्र हूँ, कृषि ऋण की चिंता से, मुझे मिला **झारखण्ड कृषि ऋण माफ़ी योजना का लाभ**

मैं स्वतंत्र हूँ, बुढ़ापे की आर्थिक समस्या से, मुझे मिला **सर्वजन पेंशन योजना का लाभ**

मैं स्वतंत्र हूँ, बीमारी में खर्च की चिंता से, सरकार दे रही है **अबुआ स्वास्थ्य सुरक्षा योजना का लाभ**

आइये हमसब मिलकर झारखण्ड के वीर सपूतों और वीरांगनाओं के सोना झारखण्ड के सपनों को साकार करने में अपना योगदान दें।

हेमन्त सोरेन
मुख्यमंत्री, झारखण्ड

सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, झारखण्ड सरकार

गृह त्यागी जनजातीय स्वतंत्रता सेनानी के परिवार सम्मान से भी हुए उपेक्षित

स्वतंत्रता सेनानी सिंगराज सिंह मानकी के परिवार को आजादी के दिन भी नहीं किया गया याद

ब्रजेश कुमार/बिभा

खूँटी । देश आजादी का 76 वर्ष बीत गये और आज 77वाँ स्वतंत्रता दिवस है। लेकिन खूँटी के एकमात्र जनजातीय स्वतंत्रता सेनानी जिन्होंने अंग्रेजों को देश छोड़ने के लिए विवश किया। और अंग्रेजी हुकूमत को स्वीकार नहीं की। ऐसे गृह त्यागी जनजातीय स्वतंत्रता सेनानी सिंगराज सिंह मानकी के परिवार आज के दिन कुछ नहीं तो सम्मान से भी उपेक्षित महसूस कर रहे हैं। जिनकी वृद्ध पत्नी ने बताया कि उन्हें जिला प्रशासन याद तक नहीं करता है।

स्वतंत्रता सेनानी की उपेक्षा करके सम्मान नही मिलने से दुखी है सिंहराज सिंह मानकी के परिवार

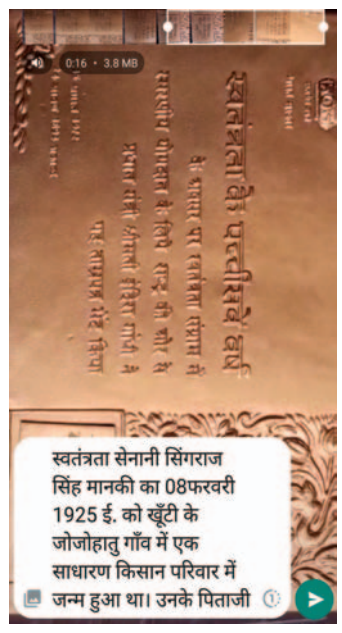

गांधी जी के साथ साबरमती आश्रम में रहकर कदम से कदम मिलाकर स्वतंत्रता आंदोलन में चलनेवाले खूँटी जिले के स्वतंत्रता सेनानी सिंगराज सिंह मानकी के परिवार को सम्मान नहीं मिलने से दुखी हैं। इनके परिवार को स्वतंत्रता दिवस पर भी बुलाया नहीं जाता। एक तरफ पूरा देश तिरंगा सम्मान पर कार्यक्रम कर रही है, लेकिन खूंटी जिला प्रशासन को इसकी फिक्र है और न ही स्थानीय नेताओं को। जिन्होंने देश की के लिए घर द्वार सभी को छोड़कर जिलों और राज्यों को लांघ गुजरात जाकर अंग्रेजी हुकूमत को अहिंसा के मार्ग पर चलकर देश को स्वतंत्र कराने में योगदान दिया था। लेकिन इनके परिवार को किसी भी कार्यक्रम में पूछा नहीं जाता है, इसका इन्हें मलाल है। प्रखण्ड क्षेत्र के जोजोहातु गाँव निवासी रहे आदरणीय सिंगराज मानकी के नाम का प्रखण्ड मुख्यालय में शिलालेख है। जिसमें स्वतंत्रता सेनानी के नामों में सिंगराज सिंह मानकी जी का इकलौता नाम है।

बता दें कि, जिले में उत्कृष्ट कार्य करने वाले को जिला प्रशासन स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित करती है। जो जिला प्रशासन के दृष्टिकोण से वे अच्छे कार्य किए हैं। लेकिन देश को स्वतंत्र कराने में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करने वाली गृहत्यागी गांधीजी के सहयोगी स्वर्गीय सिंगराज सिंह मानकी का परिवार जोजोहातु गाँव के अपने घर में ही सिमट कर रह गया है।

देश की स्वाभिमान की रक्षा राजनेता तो करते हैं लेकिन जिन्होंने एक जनजातीय किसान परिवार के युवक रहे सिंगराज सिंह मानकी अभावग्रस्त स्थिति में देश को आजादी दिलाने में भूमिका निभाई थी। आज ऐसे परिवार को भुला दिए गए। जिले की किसी भी कार्यालय और राजनेताओं की कार्यालयों में इनका चित्र तक देखने को नहीं मिलता है। लेकिन सिंगराज सिंह मानकी जी को कोई पहचानता तक नहीं।

हमें सम्मान देना तो दूर की बात, जिला प्रशासन याद तक नहीं करती जबकि प्रखण्ड कार्यालय में नाम उकेरित है - गोवर्धन

सिंहराज सिंह मानकी का पुत्र गोवर्धन सिंह मानकी ने बताया कि किसी भी कार्यक्रम में जिला प्रशासन पूछता तक नहीं है और कभी भी स्वतंत्रता सेनानी के नाम सम्मान भी नहीं दिया। हमारे पिताजी को केवल एक ही व्यक्ति सम्मान दी। जो तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व इंदिरा गांधी 1972ई में दिल्ली बुलाकर ताम्रपत्र देकर सम्मानित की थी। राज्य के पहले मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी थे तब राँची बुलाया गया था। लेकिन अब इस परिवार को जिला प्रशासन और राजनेता भूल गये। जिसका स्वतंत्रता सेनानी सिंगराज सिंह मानकी के परिवार को मलाल है। हमें सम्मान दे न दे लेकिन आज भी स्वतंत्रता सेनानी की धर्मपत्नी जीवित है उन्हें याद तक नहीं किया जाता है।

दक्षिण पूर्व रेलवे - निविदा

भारत के राष्ट्रपति के लिए तथा उनकी ओर से मंडल रेल प्रबंधक/अभियांत्रिकी, दक्षिण पूर्व रेलवे, चक्रधरपुर खुली निविदा के तहत ई-निविदाएं आमंत्रित करते हैं। इन निविदाओं के तहत मैनुअल प्रस्ताव की अनुमति नहीं है, और प्राप्त ऐसे किसी भी मैनुअल प्रस्ताव को नजरअंदाज कर दिया जाएगा। **क्रम संख्या:** 1। **निविदा सूचना संख्या: सीकेपी-वेस्ट-24-25-19, दिनांक: 13.08.2024। कार्य का नाम:** झारसुगुड़ा पैसेंजर यार्ड में लाइन संख्या 1 की बैलेस्टिंग सहित लाइन संख्या 1 और 2 के बीच ड्रेन का सुधार। **निविदा मूल्य:** रु. 1,30,77,589.07। **बयाना राशि:** रु. 2,15,400। **क्रम संख्या:** 2। **निविदा सूचना संख्या: सीकेपी-वेस्ट-24-25-20, दिनांक: 13.08.2024। कार्य का नाम:** बंडामुंडा में कोयल नदी जोबाघाट में इन्टेक कुआं/इंफिल्ट्रेशन गैलरी के प्रावधान के साथ डबल स्टेज पंपिंग की व्यवस्था। **निविदा मूल्य:** रु. 2,71,95,249.09। **बयाना राशि:** रु. 2,86,000। **क्रम संख्या:** 3। **निविदा सूचना संख्या: सीकेपी-वेस्ट-24-25-21, दिनांक: 13.08.2024। कार्य का नाम:** (1) एसएसई (पी.वे)/बंडामुंडा के अधिकार क्षेत्र के अधीन ट्रैक के समानांतर कटिंग में आरसीसी ड्रेन का निर्माण। (2) एसएसई (पी.वे)/राजगंगपुर के अधिकार क्षेत्र के अधीन ट्रैक के समानांतर कटिंग में आरसीसी ड्रेन का निर्माण। **निविदा मूल्य:** रु. 4,85,02,517.84। **बयाना राशि:** रु. 3,92,500। **क्रम संख्या:** 4। **निविदा सूचना संख्या: सीकेपी-वेस्ट-24-25-22, दिनांक: 13.08.2024। कार्य का नाम:** वरिष्ठ डीईएन (पश्चिम)/ चक्रधरपुर के अधिकार क्षेत्र में राउरकेला-झारसुगुड़ा के बीच किमी 486/5-7 पर पुल सं. 22 (अप), किमी 480/17-19 पर पुल सं. 28 (डाउन), किमी 479/19-21 पर पुल 29 (डाउन), किमी 475/9-11 पर पुल सं. 36 (अप) और राउरकेला-बीरमित्रपुर के बीच किमी 427/10बी-11बी पर पुल सं. 20ए और किमी 415/21-23 पर पुल सं. 128 के खंभों और एबटमेंट की आरसीसी जैकेटिंग। **निविदा मूल्य:** रु. 4,09,66,531.40। **बयाना राशि:** रु. 3,54,800। **निविदा प्रपत्र की कीमत:** 0 (क्रमांक 1 से 4 प्रत्येक के लिए)। **खुलने की तारीख:** 10.09.2024 (क्रमांक 1 से 4 प्रत्येक के लिए)। निविदा वेबसाइट **http://www.ireps.gov.in** पर देखी जा सकती है। निविदादाता/ बोलीदाताओं के पास क्लास-III डिजीटल सिग्नेचर प्रमाणपत्र अवश्य होना चाहिए और उन्हें आईआरईपीएस पोर्टल के अधीन अवश्य पंजीकृत होना चाहिए। सिर्फ पंजीकृत निविदादाता/बोलीदाता ही ई-निविदा में भाग ले सकते हैं। ई-निविदा में भाग लेते समय सभी सम्बंधित कागजात अवश्य अपलोड करने होंगे। **द्रष्टव्य:** ई-निविदा प्रपत्र सभी निविदादाताओं को निःशुल्क जारी किये जायेंगे (प्राधिकारी- रेलवे बोर्ड की पत्र संख्या 2020/सीई-I / सीटी/3ई/जीसीसी/पॉलिसी दिनांक 16.07.2020)। **(PR-484)**

बीके प्रीति बहन ने बेती पंचायत अंतर्गत बीके गीता पाठशाला के बहन-भाइयों को राखी बांधी

बिभा संवाददाता

खलारी । ब्रह्माकुमारी गीता पाठशाला डकरा सुभाष नगर के नियमित बीके प्रीति बहन ने बुधवार को बेती पंचायत अंतर्गत बीके गीता पाठशाला के बहन-भाइयों को राखी बांधी। उन्होंने बताया कि प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय गुमला शाखा की ओर से 15 दिन पहले रक्षाबंधन का पर्व मनाया जाता है । वैसे तो रक्षाबंधन पर बहन-भाई की कलाई पर राखी बांधती हैं, और भाई अपनी बहन की रक्षा का संकल्प लेता है। वास्तव में भाई-बहन का पवित्र रिश्ता होता है। रक्षा का मतलब हमें हर एक की रक्षा करनी चाहिए। बुराई का त्याग ही सच्चा रक्षाबंधन हैं। उन्होंने कहा कि विश्व विकारों को खत्म कर हमें पुण्य के कर्म करने चाहिए ताकि परिवार में एकता बनी रहे। हमें परिवार में रहते हुए चिंता व भय नहीं होता। हमें अपने जीवन की बुराइयों से रक्षा करनी चाहिए। उन्होंने बताया कि तिलक लगाने का मतलब आध्यात्मिक स्मृति में टिक जाना होता है। आध्यात्मिक स्मृति में रहकर हर कर्म करने से विजय होती है। उन्होंने कहा कि अगर हम परिवार में रहते हुए अपने भाइयों से डरेंगे तो सच्ची आजादी नहीं होगा। सच्ची आजादी तभी होंगी जब राखी बांधकर मानसिक विकृतियों बुराइयों एवं कुरीतियों से स्वयं की रक्षा का संकल्प लेना प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी होनी चाहिए। व्यक्ति को मनोविकार और बुराइयों व व्यसनों से स्वयं की रक्षाकर अपने को आध्यात्मिक व नैतिक मूल्यों के बंधन में बांधे तभी रक्षाबंधन के पवित्र पर्व की सार्थकता साकार होगी। मौके पर संजय भाई, प्रेमचंद भाई, कमल भाई, बसंती बहन, प्रीति बहन, अमिता बहन, किरण बहन, निशा बहन, छाया बहन आदि मौजूद थे।

मशाल जुलूस निकाल कर बांग्लादेश के घटना का हिंदू समुदाय ने किया विरोध

बिभा संवाददाता

खूँटी । नगर पंचायत के मुख्य सड़क स्वतंत्रता दिवस के पूर्व संध्या में बुधवार शाम को हिन्दू समुदाय का जनाक्रोश भरा मशाल जुलूस निकाला गया। जिसमें सैकड़ों की संख्या में हिंदूवादी संगठन ने विशाल मशाल जुलूस निकाल कर बांग्लादेश में हिंदुओं के खिलाफ हो रहे हिंसा के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। इस विरोध प्रदर्शन में खूँटी नगर पंचायत क्षेत्र के अलावे आसपास के गाँवों के लोग तथा विभिन्न प्रखंडों के बड़ी संख्या में हिंदू समुदाय के लोग

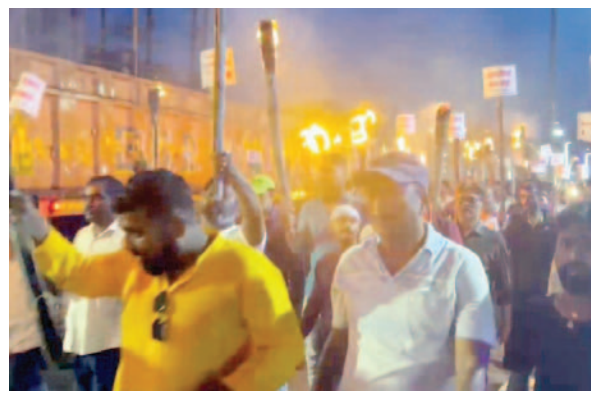

शामिल शामिल हुए। जिसमें लोगों ने हाथों में मशाल और तख्तियाँ लेकर जमकर नारेबाजी करते चल रहा थे। इस दौरान लोगों ने रोहिंग्या बांग्लादेशी भारत छोड़ो, देश के गद्दारों को गोली मारो सालो को जैसे नारों को बुलंद किया। वहीं खूँटी के मुख्य पथ नेताजी चौक , भगतसिंह चौक मशाल ही मशाल नजर आयी। वहीं बांग्लादेशी मुस्लिमों के हिंदू पर किये आक्रमण के विरोध में लोग काफी आक्रोशित थे। जहाँ एक ओर बांग्लादेशी घुसपैठियों को खूँटी सहित झारखंड से चिन्हित कर गिरफ्तार करने अथवा बांग्लादेश भेजने की बातें भी कही। वहीं इस विरोध प्रदर्शन में युवक युवती वृद्ध सहित जनजातीय समुदाय के लोगों के साथ भारी संख्या में जनसमूह शामिल रहे।

सीआरपीएफ ने तिरंगा यात्रा निकालकर दिया देशभक्ति का संदेश

बिभा संवाददाता

खूँटी । जिले में स्वतंत्रता दिवस के पूर्व बुधवार को सीआरपीएफ समेत विद्यालयों के विद्यार्थियों द्वारा जिले में तिरंगा के सम्मान में मोटरसाइकिल यात्रा सह जनजागरण जुलूस निकाला गया। जिसमें सीआरपीएफ 94 बटालियन परिसर से मोटरसाइकिल में तिरंगा लिये जवानों ने भारत माता की जयकारे लगाए। वहीं गाँव गाँव तक तिरंगा व देशभक्ति की गरिमा को लोगों के बीच ले जाया गया। कार्यक्रम की जानकारी देते हुए द्वितीय कमान अधिकारी मृत्युंजय कुमार ने बताया कि देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश के आजादी का अमृत महोत्सव विगत दो वर्ष पहले मनाने की घोषणा की थी। जिसके बाद से देश और तिरंगा के सम्मान में घर-घर तिरंगा कार्यक्रम किया जाने लगा है। इसी के तहत सीआरपीएफ 94 बटालियन द्वारा तिरंगा मोटरसाइकिल यात्रा व नुक्कड़ नाटक व जनजागरण कार्यक्रम किया जा रहा है।

एनडी ग्रोवर डीएवी पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों ने निकाली तिरंगा रैली

इधर, खूँटी शहर में महात्मा एनडी ग्रोवर डीएवी पब्लिक स्कूल कुंजला के विद्यार्थियों ने बुधवार को खूँटी नगर में पैदल तिरंगा मार्च निकाला। वहीं इस कार्यक्रम में छात्र छात्राओं के चेहरे पर काफी उत्सुकता रही। जिन्होंने भारत माता की जय वंदे मातरम कहकर नगर के मुख्य सड़कों पर भगत सिंह चौक नेताजी चौक तोरपा रोड की सड़कों पर तिरंगा लहराते हुए भ्रमण किये।

विभाजन विभीषिका की त्रासदी को आज की पीढ़ी जाने : दीपक प्रकाश

बिभा संवाददाता

रामगढ़ः भारतीय जनता पार्टी रामगढ़ जिला के तत्वाधान में विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस पर शिवम इन के सभागार में कार्यक्रम संध्या 5 बजे आयोजित किया गया।उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए बतौर मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद दीपक प्रकाश ने बताया कि धर्म के आधार पर देश को बांटने का काम कांग्रेस, नेहरू और जिन्ना के कारण हुआ। जिसमे लाखों लोगों प्रभावित हुए। उन्होंने विभाजन विभीषिका को स्मरण करते हुए कहा कि नेहरू लियाकत समझौता में दोनों देशों से आने वाले शरणार्थियों को सुरक्षा की गारंटी देने में विफल रहा और लाखो हिन्दुस्तानियों का कत्लेआम किया गया। उन्होंने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस पर उस समय की स्थिति को हम सभी को स्मरण करना चाहिए। कार्यक्रम में जिला मंत्री सरदार अनमोल सिंह ने भी अपनी आपबीती सुनाई।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजसभा सांसद एवं बिहार प्रदेश चुनाव प्रभारी दीपक प्रकाश विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन जिला महामंत्री राजू चतुवेर्दी द्वारा किया गया। कार्यक्रम के शुभारंभ में मुख्य अतिथि एवं मंचासिन अतिथियों को अंग वस्त पहनाकर स्वागत और अभिनंदन किया गया। वहीं 1947 के विभाजन विभीषिका का दंश झेल रहे और अपना सब कुछ छोड़ कर रामगढ़ आए पीड़ित परिवार को मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद दीपक प्रकाश ने अंग वस्त्र प्रदान कर अभिनंदन और सम्मानित किया। मंच पर सूरज बसीन का स्थान देकर सम्मानित किया गया। विस्थापन का दुर्दांत को जोगिंदर सिंह जग्गी ने अपनी आपबीती सुना कर कहा कैसे उनकी मां उन्हें बहुत ही कठिन परिस्थितियों को सहते हुए मेरी जान बचाते हुए भारत की सरजमीं पर आसीन हो पाए।उन्होंने कहा कि आजतक उन्हें कोई आर्थिक सहायता सरकार की ओर नहीं मिला है । कार्यक्रम में उपस्थित सभी ने विभाजन की विभीषिका को रखा। अंत में भाजपा कार्यकताओं ने काला बिला लगा कर मौन जुलूस के साथ गांधी चौक से सुभाष चौक तक पहुंचे ।

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, राँची

(आदिवासिओं की आस : तसर से विकास)

वर्ष 1964 में स्थापित : देश के विभिन्न राज्यों में विस्तृत नेटवर्क

सभी देशवासियों को स्वतन्त्रता दिवस 15 अगस्त 2024 की हार्दिक शुभकामनाएं

अधिदेश:

- राष्ट्रीय संगठन के रूप में कार्यरत रहते हुए बुनियादी एवं बहुपयोगी अनुसंधान, प्रसार एवं प्रौद्योगिकी हस्तांतरण तथा प्रक्षेत्र मानव श्रम के सृजन के माध्यम से तसर रेशम उद्योग को बढ़ावा देना एवं सुसंगठित करना।

उद्देश्य

- तसर रेशम के उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि हेतु उपयुक्त व उत्कृष्ट प्रौद्योगिकी विकसित करना।
- तसर रेशम उद्योग को सुदृढ़ करने हेतु कौशल एवं उद्यमिता का विकास।
- ग्रामीण आबादी मुख्यत: आदिवासियों एवं महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार हेतु तसर रेशम उद्योग को आय के स्रोत के रूप में प्रस्तुत करना।
- बाजार की माँग के अनुसार तसर रेशम उत्पादों में विविधीकरण तथा उप-उत्पादों के अधिकाधिक उपयोग द्वारा मूल्यवर्धन।

गतिविधियाँ:

- तसर भोज्य पौधों, रेशमकीट एवं कोसोत्तर क्षेत्र में मौलिक एवं व्यावहारिक अनुसंधान कार्य।
- प्रजनक प्रजातियों का विकास, रखरखाव एवं आपूर्ति।
- रेशम कीटपालन, कोसा परिरक्षण एवं बीज उत्पादन के लिए नयी तकनीकों का विकास।
- तसर भोज्य पौधों तथा रेशमकीट की बीमारियों एवं पीड़क कीटों के नियंत्रण हेतु प्रौद्योगिकी का विकास।
- विभिन्न प्रसार कार्यक्रमों के माध्यम से विकसित तकनीकों का प्रदर्शन एवं प्रचार।
- विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से प्रशिक्षित एवं कौशलयुक्त मानव संसाधन का सृजन।
- राज्य रेशम विभागों से समन्वयन तथा विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों को परामर्शी सेवाएं प्रदान करना।

उपलब्धियाँ

- भोज्य पौधा, रेशम कीटपालन एवं कोसोत्तर प्रौद्योगिकी तथा उन्नत धागाकरण मशीनों सहित अनेक प्रौद्योगिकियाँ विकसित।
- तसर उद्योग के विकास हेतु आवश्यकतानुरूप अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं का संचालन तथा उनके परिणामों का प्रक्षेत्र प्रतिपादन।
- वर्ष 2023-24 में तसर रेशम उत्पादन 1586 मी.टन हुआ।
- भारत सरकार द्वारा सम्पोषित अनेक अग्रणी कार्यक्रमों का सफल संचालन।
- मानव संसाधन का विकास एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक आयोजन।

डॉ. एन. बालाजी चौधरी, निदेशक

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, पिस्का नगड़ी, राँची – 835 303 दूरभाष : 0651-2775815, 2775628, 2775035

E-mail : ctrtiran.csb@nic.in, ctrticsb@gmail.com Website: www.ctri.res.in

78वां स्वतंत्रता दिवसः 15 अगस्त, 2024

भारत सरकार

केन्द्रीय मनश्चिकित्सा संस्थान

कांके, राँची,–834006, झारखण्ड, भारत

दूरभाषः 0651–2450822, 2451115, 2450448

24 घंटे आकस्मिक सेवा उपलब्ध

सी.आई.पी. में उपलब्ध सेवाओं/सुविधाओं का विवरण निदेशक, सी.आई.पी. द्वारा जनहित में जारी

बाह्यरोगी सुविधाएं / सेवाएं

- प्रतिदिन निःशुल्क बाह्यरोगी सेवाएं
- निरीक्षण / ऑकस्मिक सेवा वार्ड
- अलग व्यस्क एवं बाल बाह्य रोग विभाग
- साइकोसोशल विभाग
- कैन्टीन एवं जनउपयोगी सेवाएं
- ऑन लाईन रजिस्ट्रेशन (ओ.आर.एस.)
- **टेली परामर्श व्हाट्सअप संख्या** : 9334915057 कृपया व्हाट्सअप पर डॉक्टर के पर्चे की फोटो भेजें (कृपया वेबसाइट पर अधिक विवरण देखें)
- **टेली–मनोचिकित्सा संख्या** : 9334915052
- **दूरभाष संख्या** (सामान्य सूचना): 0651–2451115, 0651–2451116, 0651–2451119
- विडियो परामर्शः अधिक जानकारी के लिए वेबसाईट देखें।
- **टेली–मानस सेवाः** निःशुल्क 24X7 मानसिक स्वास्थ्य परामर्श / काउंसलिंग। टोल फ्री नंबर : 14416 या 1800–89–14416

टेली मानस को कॉल करें :

- उदासी, चिड़चिड़ापन या निराशा।
- परीक्षा के तनाव से गुजर रहे हैं।
- आम नींद की समस्या से परेशान हैं।

जब आपको जीवन से हार मानने का मन हो, तो याद रखें सहायता केवल एक कॉल की दूरी पर है–14416

विशेष क्लीनिक

- सोमवारः मूड एवं न्यूरोलॉजी
- मंगलवारः निद्रा रोग
- बुधवारः क्रॉनिक सिजोफ्रीनिया, सेक्स, चर्मरोग, धूम्रपान निरोधक, नशाविमुक्ति, मैटाबॉलिक रोग
- गुरूवारः मिरगी एवं मूवमेंट डिसऑर्डर
- शुक्रवारः वृद्धावस्था संबंधित रोग
- शनिवारः सिरदर्द रोग, धूम्रपान निरोधक, नशाविमुक्ति, मेटाबॉलिक रोग
- प्रतिदिनः बाल मनोचिकित्सा, ओ.सी.डी. एवं व्यक्तित्व विकास

अंतर्वासीय रोगीयों के लिए सुविधाएं

- सभी बेड शुल्क के साथ
- उच्च वर्ग के लिए विशेष वार्ड
- महिलाओं के लिए अलग वार्ड
- परिवार के लिए कॉटेज की सुविधा

बाल एवं किशोरावस्था संबंधित मानसिक रोग

- मरीज परिजनों के साथ भरती किए जाते हैं।

नशाविमुक्ति केन्द्र व विभाग

- डीटोक्सीफिकेशन एवं पुर्नवास
- शराब व नशाविमुक्ति के लिए उच्चतकनीकी इकाई

व्यावसायिक चिकित्सा विभाग

- पुनर्वास / शेल्टर्ड कार्यशाला
- पुनर्निवेशन मनश्चिकित्सा
- शारीरिक पुर्नवास
- टोकन इकॉनोमी

सामुदायिक पहुँच कार्यक्रम

- वेस्ट बोकारो (घाटो)
- हजारीबाग
- चन्दनक्यारी, बोकारो
- विद्यालय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम

सामुदायिक जागरूकता कार्यक्रम

- राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक अखबारों में मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता संबंधी विवरण
- कार्यशालाओं का आयोजन
- सी.आई.पी. वेबसाइट पर मानसिक बिमारियों संबंधित लेख

स्नातकोत्तर शिक्षण

- एम.डी. (मनोचिकित्सा) एवं डी.पी.एम.
- पी.एच.डी. एवं एम.फिल. (नैदानिक मनोविज्ञान)
- एम.फिल. (साईक्याट्रीक सोशल वर्क)
- साईक्याट्रीक नर्सिंग में डिप्लोमा

पैथोलॉजी एवं बॉयोकेमिस्ट्री विभाग

- हीमेटोलॉजी व बायोकेमिस्ट्री ऑटो एनालाइजर
- एच.पी.एल.सी. एवं थिन लेअर क्रोमैटोग्राफी
- मल्टीफन्कशनल एलिजा रीडर एवं आइन–स्पेस्फिक ऐसे सिस्टम
- बेक्टेक यूनिक
- केमी ल्यूमिसेंस ऐसे
- –80 डिग्री फ्रीजर

कार्डियोफिजियोलॉजी विभाग

- कम्प्यूटीकृत ई.सी.जी.
- ट्रेडमिल टेस्ट

सेन्टर फॉर कोग्निटिव न्यूरोसाइंसेज

- नैदानिक एवं विडियो ई.ई.जी. (32–64 चैनल) एवं ई.सी.जी.
- कम्प्यूटीकृत उच्च वर्गीय ई.ई.जी (64–, 128–, 192–, 256–चैनल)
- कोग्नेटिव इवेंट रिलेटेड / इवोक्ड पोटेंशियल (40–, 128–चैनल)
- देश की सबसे विकसित ट्रांसक्रेनियल मैग्नेटिक और डाइरेक्ट करंट स्टिमुलेशन लैब
- निद्रा प्रयोगशाला
- टी.एम.एस. – ई.ई.जी. सुविधा
- क्वाड्री पल्स स्टीमूलेशन

सेन्टर फॉर न्यूरोईमेजिंग एवं रेडियोलॉजिकल साइंसेज

- नैदानिक एक्सरे एवं अल्ट्रासाउंड
- क्रेनियल एवं कलर डॉप्लर
- मल्टीस्लाइस सी.टी. स्कैन (पूरे शरीर का)
- 3टी एफ.एम.आर.आई.
- एम.आर.आई. ब्रेन (रु. 2000 / – लगभग) एवं एम.आर.आई. होल बॉडी स्क्रीनिंग (रु. 3000 / – लगभग)

उच्च तकनीकी कम्प्यूटर विभाग

- सम्पूर्ण संस्थान का कम्प्यूटरीकरण एवं वाई–फाई की सुविधा
- वेबसाइट

पुस्तकालय

- मेडिकल लाईब्रेरी एवं मरीजों के लिए वाचनालय एवं पुस्तकालय (हमारे यहाँ 80,000 से अधिक पुस्तकें एवं जर्नल का संग्रह है)
- रेप्रोग्राफी एवं माइक्रोफिल्मिंग
- आनलाईन लिट्रेचर सर्च / RFID आधारित तकनीक
- स्वचालित पुस्तक सर्कुलेशन सिस्टम

बाहर के मरीजों के लिए भी सरकारी दर पर जाँच की सुविधा उपलब्ध है।

क्या आप किसी मनोवैज्ञानिक समस्या से ग्रस्त हैं ?

यदि हाँ, तो मदद के लिए कृप्या सी.आई.पी. हेल्पलाइन पर संपर्क करें।

TOLL-FREE NO. 1800-345-1849 (24X7), सी.आई.पी. हेल्पलाईन नं. : 0651-2451116 (24X7)

ई–मेल : director@cipranchi.nic.in, वेबसाईट : www.cipranchi.nic.in

रांची, गुरुवार
15.08.2024
वर्ष : 9, अंक : 255 पृष्ठ : 12
मूल्य : दो रूपए

रांची से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

बिहान भारत

खबरें हमारी, विश्वास आपका

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

website : www.bihanbharat.org | bihanbharat@gmail.com | @bihan_bharat | Bihan Bharat | RNI NO - JHAHIN/2015/73988

शुभकामनाएं

बिहान भारत हिंदी दैनिक के पाठकों, विज्ञापनदाताओं, हॉकर बंधुओ को 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस के शुभअवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं ।

प्रबंधक

अवकाश की सूचना

स्वतंत्रता दिवस के सुअवसर पर दिनांक 15 अगस्त 2024 को **बिहान भारत** हिंदी दैनिक के कार्यालय में अवकाश रहेगा । अतः अखबार का अगला अंक 17 अगस्त 2024 को उपलब्ध होगा ।

सम्पादक

खिलाड़ियों पर झारखंड वासियों को गर्व : हेमन्त

बिभा संवाददाता

रांची। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन एवं विधायक कल्पना सोरेन से बुधवार को कांके रोड रांची स्थित मुख्यमंत्री आवासीय कार्यालय में 63वें अंतरराष्ट्रीय सुब्रतो कप अंडर-17 बालिका वर्ग फुटबॉल प्रतियोगिता की चैंपियन टीम झारखंड के खिलाड़ियों ने मुलाकात की। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने झारखंड अंडर-17 बालिका वर्ग की विजेता टीम के खिलाड़ियों को उनके शानदार प्रदर्शन के लिए उन्हें हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

मुख्यमंत्री ने खिलाड़ियों से कहा कि आपकी यह उपलब्धि समस्त झारखंडवासियों को गर्व की अनुभूति कराती है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आप सभी खिलाड़ियों ने एक चैंपियन टीम के अनुरूप शानदार प्रदर्शन कर देश और दुनिया में झारखंड का नाम रोशन कर दिखाया है।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री एवं कल्पना सोरेन ने उपस्थित सभी खिलाड़ियों को मुंह मीठा कराकर उनका हौसला अफजाई की तथा उन्हें उज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दी। मौके पर विधायक कल्पना सोरेन ने बालिका खिलाड़ियों के प्रदर्शन एवं मेहनत की प्रशंसा की। उन्होंने खिलाड़ियों से कहा कि आप सभी बेहतरीन खिलाड़ी हैं, आगे भी आप मेहनत इसी तरह जारी रखें और राज्य का नाम रोशन करते रहें। मौके पर मुख्यमंत्री एवं विधायक कल्पना सोरेन ने बालिका खिलाड़ियों को स्पोर्ट्स किट बैग प्रदान किया।

इस अवसर पर स्टेट प्रोजेक्ट डायरेक्टर आदित्य रंजन, राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी धीरसेन सोरेंग, अंडर -17 बालिका वर्ग फुटबॉल टीम की खिलाड़ियों में अमीषा उरांव, प्रतिभा भोक्ता, प्रियतम तिर्की, क्रांति उरांव, मैना कुमारी, चांदनी कुमारी, उर्वशी कुमारी, बबिता कुमारी, संजना उरांव, पुनीता कुमारी, ललिता कुमारी, संगीता कुमारी, पूजा कुमारी, एवलिन कुजूर, सोनामती होरो, पूनम कुमारी, टीम कोच सोमनाथ सिंह, सुशील वर्मा, टीम मैनेजर बिंदु कुजूर, मोटिवेशनल ट्रेनर अनुपम तिवारी एवं अन्य उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबरें

एसपी दीपक पांडेय को मिलेगा राष्ट्रपति वीरता पुरस्कार

रांची। गढ़वा जिले के एसपी दीपक पाण्डेय को उनके बेहतर कार्य के लिए राष्ट्रपति वीरता पुरस्कार के लिए गृह मंत्रालय ने नामित किया है। उन्हें यह पुरस्कार वर्ष 2022 मे भाकपा माओवादियों से हुई मुठभेड़ के बाद मिली सफलता के लिए दिया जा रहा है। वे लोहरदगा मे एएसपी अभियान के तौर पर पदस्थापित थे। उन्हें 29 दिसंबर, 2022 को एक गुप्त सूचना मिली थी कि भाकपा माओवादियों का एक दस्ता लोहरदगा जिले के बुगडू थाना क्षेत्र के कोरगो के जंगल में है। इसी सूचना के आधार पर एएसपी अभियान के नेतृत्व मे जिला पुलिस बल और सीआरपीफ के साथ भाकपा माओवादी के रविंद्र गंझु के दस्ते के साथ मुठभेड़ हुई थी। इस दौरान एक सब जोनल कमांडर चंद्रभान पाहन की मुठभेड़ मे मौत हुई थी जबकि दूसरा सबजोनल कमांडर गोविन्द ब्रिजिया को पकड़ा गया था। इसी बहादुरी को लेकर उन्हें पदक से सम्मानित किया जा रहा है।

लाल किले की प्राचीर से 11वीं बार राष्ट्र को संबोधित करेंगे मोदी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी गुरुवार को 78वें स्वतंत्रता दिवस के मौके पर ऐतिहासिक लाल किले की प्राचीर से लगातार 11वीं बार राष्ट्र को सम्बोधित करेंगे। ध्वजारोहण के समय भारतीय वायु सेना के दो एडवांस्ड लाइट हेलीकॉप्टरों से ध्रुव लाइन एस्टर्न फॉर्मेशन में पुष्प वर्षा की जाएगी। समारोह को देखने के लिए लगभग 6 हजार विशेष अतिथियों को आमंत्रित किया गया है। लाल किले पर पहुंचने पर प्रधानमंत्री का स्वागत रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ और रक्षा सचिव गिरिधर अरमाने करेंगे। रक्षा सचिव दिल्ली क्षेत्र के जनरल ऑफिसर कमांडिंग (जीओसी) लेफ्टिनेंट जनरल भवनीश कुमार का प्रधानमंत्री से परिचय कराएंगे। इसके बाद दिल्ली क्षेत्र के जीओसी नरेन्द्र मोदी को सलामी मंच पर ले जाएंगे, जहां संयुक्त अंतर-सेवा और दिल्ली पुलिस गार्ड प्रधानमंत्री को सामान्य सलामी देंगे। इसके बाद प्रधानमंत्री सलामी गारद का निरीक्षण करेंगे। प्रधानमंत्री के लिए सलामी गारद दल में सेना, नौसेना, वायु सेना और दिल्ली पुलिस से एक-एक अधिकारी और 24 कर्मी शामिल होंगे। सलामी गारद की कमान कमांडर अरुण कुमार मेहता संभालेंगे। प्रधानमंत्री की सलामी गारद में सेना टुकड़ी की कमान मेजर अर्जुन सिंह, नौसेना टुकड़ी की कमान लेफ्टिनेंट कमांडर गुलिया भावेश एनके और वायु सेना टुकड़ी की कमान स्क्वाड्रन लीडर अक्षरा उनियाल संभालेंगी। दिल्ली पुलिस की टुकड़ी की कमान एडिशनल डीसीपी अनुराग द्विवेदी संभालेंगे। गार्ड ऑफ ऑनर का निरीक्षण करने के बाद प्रधानमंत्री लाल किले की प्राचीर की ओर बढ़ेंगे, जहां उनका स्वागत रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ, चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल अनिल चौहान, थल सेनाध्यक्ष जनरल उपेंद्र द्विवेदी, नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश के. त्रिपाठी और वायु सेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल वीआर चौधरी करेंगे। दिल्ली क्षेत्र के जीओसी प्रधानमंत्री को ध्वजारोहण के लिए मंच तक ले जाएंगे।

संक्षिप्त खबरें

सरला बिरला में नशामुक्त भारत अभियान के तहत कार्यक्रम का आयोजन

रांची(बिभा) : सरला बिरला विश्वविद्यालय परिसर में नशामुक्त भारत अभियान के तहत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में एनएसएस वॉलंटियर के अलावा विवि के शिक्षकों, शिक्षकेत्तर कर्मचारियों और छात्र- छात्राओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को स्वयं एवं परिवार के सभी सदस्यों को नशे से दूर रहने और समाज को नशामुक्त बनाने में अपनी भूमिका निभाने की शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर मुख्य रूप से डीन डॉ. नीलिमा पाठक, आईक्यूएसी निदेशक डॉ. संदीप कुमार, डॉ. गौतम तांती, डॉ. दिलीप कुमार, डॉ. रूपा, डॉ. राधा माधव झा, डॉ. रिया मुखर्जी, डॉ. विद्या झा, डॉ. पूजा मिश्रा, डीन डॉ. शुभ्रजीत मंत्री, डीन डॉ. आर.के. सिंह आदि उपस्थित हुए। एनएसएस के विश्वविद्यालय समन्वयक डॉ. संजीव कुमार सिन्हा ने उपस्थित लोगों को शपथ दिलाई। कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए विवि के माननीय कुलाधिपति श्री बिजय कुमार दलान, माननीय डीजी प्रो. गोपाल पाठक, माननीय डॉ. प्रदीप वर्मा और माननीय प्रभारी कुलपति प्रो. एस.बी. डांडीन ने अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की।

धनबाद मंडल में निकली गई तिरंगा रैली

धनबाद (बिभा): 78वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हर घर तिरंगा अभियान के तहत आज धनबाद मंडल में तिरंगे के साथ बाइक रैली निकली गई । मंडल रेल प्रबंधक श्री कमल किशोर सिन्हा द्वारा इस रैली को हरी झंडी दिखाकर मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय से रवाना किया गया। यह मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय से हिल कॉलोनी, रेलवे हॉस्पिटल कॉलोनी, डीएस कॉलोनी और इंस्टिट्यूट कालोनी होते हुए धनबाद रेलवे ग्राउंड तक गई फिर वापस कार्यालय पहुंची। इस अवसर पर इस रैली में मंडल के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण भी शामिल थे।

विभाजन की विभीषिका को दर्शाती एक चित्र प्रदर्शनी का आयोजन

धनबाद (बिभा): 'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस' के अवसर पर धनबाद स्टेशन पोर्टिको में देश के विभाजन की विभीषिका को दशार्ती एक चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्वर्गीय स्वतंत्रता सेनानी श्री बालेश्वर प्रसाद सिंह की धर्मपत्नी श्रीमती रुकमणी देवी जी एवं भूतपूर्व रेल कर्मचारियों का मंडल रेल प्रबंधक श्री कमल किशोर सिन्हा द्वारा स्वागत किया गया तथा श्रीमती रुकमणी देवी जी द्वारा प्रदर्शनी के आयोजन का उद्घाटन किया गया। मंडल रेल प्रबंधक महोदय ने श्रीमती रुकमणी देवी जी, पूर्व रेल कर्मचारियों, मंडल के अन्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों सहित उपस्थित सभी लोगों को संबोधित किया। उन्होंने देश के विभाजन की विभीषिका को दशार्ती चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया। इसके उपरांत राष्ट्रीय एकता एवं देशभक्ति पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया ।

एसपी के निर्देश पर चलाया गया एंटी क्राइम चेकिंग अभियान

रांची(बिभा)। रांची के ग्रामीण एसपी सुमित कुमार अग्रवाल के निर्देश पर मंगलवार देर रात ग्रामीण क्षेत्रों में एंटी क्राइम चेकिंग अभियान चलाया गया। इस दौरान दशमफॉल, राहे, मांडर, चान्हो, सोनाहातू, लापुंग, दलादली, इटकी, मुरी, महिला थाना बुंडू, नगड़ी, रातु, तमाड़, ओरमांझी, बुढ़मू और सिल्ली थाना के द्वारा चेकिंग किया गया। ग्रामीण एसपी ने बताया कि रात में अड्डा बाजी करने वाले के खिलाफ अभियान चलाया गया। साथ ही एंटी क्राइम चेकिंग अभियान भी चलाया गया। चेकिंग के दौरान दर्जनों से अधिक वाहनों की चेकिंग की गयी।

पूर्वी रेलवे ने अपने क्षेत्राधिकार में विभाजन विभीषिका स्मरण दिवस मनाया

कोलकाता(बिभा): पूर्वी रेलवे ने 14 अगस्त, 2024 को अपने क्षेत्राधिकार के विभिन्न स्टेशनों पर प्रदर्शनी आयोजित करके विभाजन विभीषिका स्मरण दिवस को श्रद्धापूर्वक मनाया। यह आयोजन स्वतंत्रता से पूर्व ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से देश के विभाजन के दौरान भारतीय जनसंख्या द्वारा सहन की गई पीड़ा को स्मरण करने के लिए किया गया। यह दिन उन लाखों लोगों की वेदना, दुःख और दर्द को उजागर करने के लिए समर्पित है जो विभाजन के शिकार हुए थे।

पूर्वी रेलवे के विभिन्न स्टेशनों पर निम्नलिखित प्रदर्शनी आयोजित की गईः

सियालदह डिवीजनः राणाघाट, सियालदह

आसनसोल डिवीजनः आसनसोल, दुगार्पुर

मालदा डिवीजनः भागलपुर, जमालपुर, साहिबगंज, मालदा टाउन

हावड़ा डिवीजनः हावड़ा, बर्द्धमान

हावड़ा स्टेशन पर, स्वर्गीय प्रियोनाथ कर्माकर रॉय (स्वतंत्रता सेनानी) की पत्नी श्रीमती माधबी कर्माकर ने इस अवसर की शोभा बढ़ाई और स्वतंत्रता सेनानियों के परिवार द्वारा एक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया। बर्द्धमान स्टेशन पर, स्वर्गीय सस्तो गांगुली (स्वतंत्रता सेनानी) की पत्नी श्रीमती पार्वती गांगुली को सम्मानित किया गया। आसनसोल स्टेशन पर, 85 वर्षीय पूर्व रेलवे कर्मचारी श्री सत्य रंजन डे ने विभाजन विभीषिका स्मरण दिवस के अवसर पर आसनसोल स्टेशन पर आर्ट गैलरी का उद्घाटन किया, जिसमें वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी, आसनसोल डिवीजन/पूर्वी रेलवे श्रीमती बबल यादव और अन्य अधिकारी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

स्किल डेवलपमेंट सेंटर चाईबासा के युवक युवतियों के बीच ऑफर लेटर का वितरण

तकनीकी युग में हर एक हाथ को हुनरमंद बनाया जाए : दीपक बिरुवा

बिभा संवाददाता

चाईबासा। टाटा स्टील फाउंडेशन द्वारा संचालित स्किल डेवलपमेंट सेंटर चाईबासा से प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके युवक युवतियों के बीच बुधवार को ऑफर लेटर का वितरण किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय मंत्री श्री दीपक बिरुवा एवं विशिष्ट अतिथि उपायुक्त श्री कुलदीप चौधरी, टाटा स्टील के एडमिन हेड दीपक श्रीवास्तव, टाटा स्टील फाउंडेशन के यूनिट हेड तुलसीदास गणवीर उपस्थित हुए। इस दौरान विभिन्न ट्रेड में प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके युवक युवतियों को अतिथियों के हाथों ऑफर लेटर वितरण किया गया।

इस अवसर पर मंत्री श्री दीपक बिरुवा ने युवाओं को शुभकामना देते हुए अच्छे से कार्य करते हुए आगे बढ़ने की बात कही। साथ ही टाटा स्टील फाउंडेशन से आग्रह करते हुए कहा यहां माइनिंग क्षेत्र होने के नाते इससे संबंधित युवाओं को प्रशिक्षण देते हुए यहीं रोजगार उपलब्ध कराई जाए। झारखंड सरकार भी इसको लेकर काफी प्रयासरत है।

उन्होंने कहा कि इस तकनीकी युग में यह आवश्यक है कि हर एक हाथ को हुनरमंद बनाया जाए। जिससे युवाओं के भविष्य की जिंदगी की राह को आसान बनाया जा सके। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर युवाओं को स्वाबलंबी बनाने की महत्वाकांक्षी कार्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु टाटा स्टील फाउंडेशन प्रयासरत है। जिले में युवक-युवतियों को उनके रुचि के ट्रेड में हुनरमंद बनाकर आत्मनिर्भर बनाने का कार्य जारी है।

उपायुक्त श्री कुलदीप चौधरी ने कहा कि हर युवाओं के हाथ में हुनर हो, सभी कुशल बने ताकि अपनी जीविका को चला सके।

इस मौके पर युवाओं को ऑफर लेटर मिलने पर युवा आत्मविश्वास से लबरेज दिखे। वहीं कौशल विकास केंद्र से प्रशिक्षण प्राप्त कर हुनरमंद बने युवक-युवतियों के चेहरे पर आज आत्मनिर्भरता की मुस्कान बिखर रही है। टाटा स्टील फाउंडेशन के पदाधिकारियों ने बताया कि युवक-युवतियों को प्लेसमेंट के आधार पर रोजगार का अवसर उपलब्ध करवाया गया है। आगे भी प्रशिक्षण देते हुए रोजगार उपलब्ध कराया जाएगा।

रिम्स के जूनियर डॉक्टर्स का दूसरे दिन भी पेन डाउन स्ट्राइक जारी

रांची। कोलकाता के आरजीकेएमसीएच की जूनियर महिला डॉक्टर का रेप के बाद बेरहमी से हत्या के विरोध में रिम्स के जूनियर डॉक्टर का बुधवार को भी पेन डाउन स्ट्राइक जारी है। फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया मेडिकल एसोसिएशन (एफएआईएमए), रेजिडेंट डॉक्टर्स एसोसिएशन (आरडीए) के साथ रिम्स जूनियर डॉक्टर एसोसिएशन (जेडीए) ने मंगलवार को बैठक की, जिसमें दूसरे दिन भी पेन डाउन आंदोलन जारी रखने का फैसला किया है। जूनियर डॉक्टर के स्ट्राइक से मंगलवार को ओपीडी और रूटीन सर्जरी की सेवाएं प्रभावित रही। हालांकि, सभी प्रकार की इमरजेंसी सेवाएं बहाल रही। आम तौर पर रिम्स में ओपीडी में प्रतिदिन 2000 से ज्यादा पर्चियां कटती है, लेकिन मंगलवार को सिर्फ 270 पर्चियां कटी। ये भी इलाज के लिए भटकते रहे।

सीबीसी रांची द्वारा डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी यूनिवर्सिटी में विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस के मौके पर दो दिवसीय चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन

भारत का विभाजन भारत की आजादी से बड़ी घटना है : पदम श्री बलबीर दत्त

बिभा संवाददाता

रांची। केंद्रीय संचार ब्यूरो, राच के द्वारा विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस के मौके पर बुधवार को डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी यूनिवर्सिटी में दो दिवसीय चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन वरिष्ठ पत्रकार पद्मश्री श्री बलबीर दत्त व कांके विधानसभा क्षेत्र के विधायक डॉ समरी लाल द्वारा संयुक्त रूप से किया गया फीता काटकर और दीप प्रज्वलित कर किया गया ।

तदोपरांत सभी अतिथियों का शॉल, पौधा एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया एवं तिरंगा बैज वह तिरंगा पट्टा पहनाया गया।

विशिष्ट सम्मानित अतिथि के रूप में विभाजन की के दीनों को याद करते हुए पद्मश्री श्री बलबीर दत्त जी ने कहा कि विभाजन के समय की त्रासदी सुनकर रूह कांप जाएगी। इसलिए आज जरूरी है कि सभी जाति और धर्म के लोग एकजुट होकर रहें, ताकि ऐसी विभीषिका फिर किसी को ना देखनी पड़े।

श्री दत्त ने कहा कि भारत का विभाजन , भारत की आजादी से बड़ी घटना है । उन्होंने आगे कहा कि हमें खून से लथपथ आजादी मिली।

श्री दत्त ने छात्रों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि वे बड़े ख्वाब देखें और ऊंची उड़ान के बारे में सोचें। यही ऊंची उड़ान की सोच उन्हें आगे ले जाएगी। पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम इसके उदाहरण है जिन्होंने हमेशा बड़ा सपना देखने के लिए प्रेरित किया।

अपने संबोधन में कुलपति - डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी यूनिवर्सिटी - प्रोफेसर (डॉ) तपन कुमार शांडिल्य ने कहा की विभाजन विभीषिका दिवस हमें मानवीय मूल्यों जैसे करुणा, सहानुभूति और क्षमा को स्थापित करने के लिए प्रेरित करता है ।

हिन्दू और मुस्लिम धर्म के लोगों के बीच धार्मिक मुद्दों को लेकर मतभेद थे। मुस्लिम लीग ने मुसलमानों के लिए अलग देश की मांग की जिससे ये धार्मिक मतभेद और अधिक बढ़ गए।

भारत के टुकड़े करने के उद्देश्य से अंग्रेजों ने भारत में रुफूट डालो राज करोश् की नीति को अपनाया जिसने भारत के विभाजन में बड़ी भूमिका अदा की।

कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच जो कि आगे चलकर भारत-पाक विभाजन का एक बड़ा कारण बना। भारत की अंतरिम सरकार हिन्दू मुस्लिम समुदाय के बीच विश्वास पैदा करने में विफल रही ।

रांची विश्वविद्यालय की इतिहास की शिक्षिका डॉक्टर सुजाता सिंह ने विस्तार से विभाजन के कारणों फर प्रकाश डाला और कहा कि विभाजन के स्मृतियों को सहेजने की पहल करनी चाहिए और आज आयोजित यह चित्र-प्रदर्शनी एक अच्छी शुरूआत है।

विभाजन एक बहुत दर्दनाक हादसा है जहां लोगों को अपनी पहचान कोई और फिर नई जगह व वातावरण में अपनी पहचान स्थापित करने के लिए संघर्ष करना पड़ा । कार्यक्रम का संचलान दूरदर्शन की एंकर नैंसी कुमारी ने किया।

आईपीआरडी उप निदेशक ने स्वतंत्रता दिवस की तैयारियों का किया निरीक्षण

बिभा संवाददाता

रांचीः शालिनी वर्मा, उप निदेशक के नेतृत्व में सूचना जनसंपर्क निदेशालय की एक टीम ने मोरहाबादी मैदान में आयोजित होने वाले स्वतंत्रता दिवस की तैयारियों का जायजा लिया। उन्होंने मीडिया गैलरी, ध्वनि विस्तारक यंत्र एवं अन्य व्यवस्थाओं को दुरुस्त का निर्देश दिया। निरीक्षण के दौरान मुख्य रूप से सहायक निदेशक श्रीमति सुनीता धान, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी श्रीमति उर्वशी पांडेय एवं सहायक जनसंपर्क पदाधिकारी पंकज जैन मौजूद थे।

विशेष दो ट्रेनों के संचालन से 23,500 बर्थ्स की उपलब्धता

बिभा संवाददाता

कोलकाता : अतिरिक्त 23,500 बर्थ्स विशेष दो ट्रेनों के निरंतर संचालन से उपलब्ध कराई जाएंगी, ताकि यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को कम किया जा सके। इस समय के दौरान यात्रा की अत्यधिक मांग को देखते हुए, रेलवे ने यात्रियों के लिए सुविधाजनक और आरामदायक परिवहन विकल्प प्रदान करने का लक्ष्य रखा है। इस मौसम में यात्रा की बढ़ती मांग के कारण अक्सर ट्रेन टिकट प्राप्त करने में चुनौतियां आती हैं। रेलवे ने 03483/03484 भागलपुर - नई दिल्ली - भागलपुर समर स्पेशल और 03413/03414 मालदा टाउन - नई दिल्ली - मालदा टाउन समर स्पेशल ट्रेनों को उनके मौजूदा मार्ग, समय और ठहराव के अनुसार जारी रखने का निर्णय लिया है।

03413 मालदा टाउन - नई दिल्ली स्पेशल हर रविवार और गुरुवार को 15.08.2024 से 29.08.2024 के बीच (05 यात्राएं) मालदा टाउन से प्रस्थान करेगी और 03414 नई दिल्ली - मालदा टाउन स्पेशल हर सोमवार और शुक्रवार को 16.08.2024 से 30.08.2024 के बीच (05 यात्राएं) नई दिल्ली से प्रस्थान करेगी।

03483 भागलपुर - नई दिल्ली स्पेशल हर शनिवार और मंगलवार को 17.08.2024 से 31.08.2024 के बीच (05 यात्राएं) भागलपुर से प्रस्थान करेगी और 03484 नई दिल्ली - भागलपुर स्पेशल हर रविवार और बुधवार को 18

टाटानगर-जयनगर-टाटानगर साप्ताहिक एक्सप्रेस 12 फरवरी से

कोलकाता : यह निर्णय लिया गया है कि 18119/18120 टाटानगर-जयनगर-टाटानगर साप्ताहिक एक्सप्रेस को 12 फरवरी से शुरू किया जाएगा। 16.08.2024 को टाटानगर से 18119 टाटानगर-जयनगर एक्सप्रेस के रूप में और 16.08.2024 से। 17.08.2024 को जयनगर से 18120 जयनगर-टाटानगर एक्सप्रेस निम्नलिखित अनुसूची के अनुसारः18119 टाटानगर-जयनगर एक्सप्रेस आज से प्रत्येक शुक्रवार को 18.50 बजे टाटानगर से रवाना होगी। 16.08.2024 और अगले दिन 11.30 बजे जयनगर पहुंचेगी। वापसी दिशा में 18120 जयनगर-टाटानगर एक्सप्रेस प्रत्येक शनिवार को 19.30 बजे जयनगर से खुलेगी. 17.08.2024 और अगले दिन 11.30 बजे टाटानगर पहुंचेगी। स्पेशल ट्रेन रास्ते में चांडिल, मुरी, कोटशिला, राजाबेरा, धनबाद, प्रधानकुंटा, मधुपुर, जसीडीह, झाझा, किऊल, बरौनी, समस्तीपुर, दरभंगा, सकरी और मधुबनी स्टेशनों पर रुकेगी।

एसईआर 13 से 15 अगस्त तक मनाएगा हर घर तिरंगा

बिभा संवाददाता

कोलकाता : एसईआर 13 से 15 अगस्त, 2024 तक नागरिकों को अपने आवासीय परिसरों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए स्वतंत्रता दिवस समारोह के एक भाग के रूप में हर घर तिरंगा कार्यक्रम का आयोजन कर रहा है। इस पहल के पीछे का विचार देशभक्ति की भावना जगाना है। लोगों के दिलों में जोश और उत्साह के साथ भारत का स्वतंत्रता दिवस मनाएं।

स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर, दक्षिण पूर्व रेलवे क्षेत्राधिकार में स्टेशन भवनों, कार्यालयों, लोकोमोटिव आदि को तिरंगे रोशनी में रोशन किया गया है। राष्ट्र की देशभक्ति के उत्साह का जश्न मनाने के लिए विशेष प्रकाश व्यवस्था का आयोजन किया जाता है।

विभाजन की त्रासदी और विभाजन के दौरान पीड़ित लोगों की पीड़ा को उजागर करने के लिए एसईआर ने 14 अगस्त, 2024 को विभाजन भयावह स्मृति दिवस भी मनाया है। इस संबंध में, एसईआर मुख्यालय और दक्षिण पूर्व रेलवे के विभिन्न स्टेशनों पर फोटो प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है। फोटो प्रदर्शनियाँ आद्रा मंडल के आद्रा, बोकारो स्टील सिटी, बांकुरा और पुरुलिया स्टेशनों पर आयोजित की गईं; चक्रधरपुर मंडल के चक्रधरपुर, झारसुगुड़ा, टाटानगर और राउरकेला स्टेशन; रांची, हटिया, बानो, पोकला, गोविंदपुर रोड, मुरी, रामगढ़ कैंट। और रांची डिवीजन के लोहरदगा स्टेशन; खड़गपुर मंडल के खड़गपुर, शालीमार, संतरागाछी, मेचेदा, मिदनापुर, जलेश्वर, बालेश्वर, झाड़ग्राम और घाटशिला स्टेशन।

इस दिन स्टेशनों पर विभिन्न कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया है. प्रदर्शनियों के दौरान देशभक्ति के गाने बजाए गए और जनता और यात्रियों के लिए कार्यक्रमों का जश्न मनाने के लिए विभिन्न स्टेशनों पर सेल्फी पॉइंट लगाए गए।

दीघा मालदा टाउन स्पेशल एक दिसंबर तक चलेगी

कोलकाता : यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को कम करने के उद्देश्य से, दिए गए कार्यक्रम के अनुसार विशेष ट्रेनों का संचालन जारी रखने का निर्णय लिया गया है जिसमें 03465 मालदाटाउन-दीघा स्पेशल 30.11.2024 तक चलती रहेगी। 03466 दीघा-मालदा टाउन स्पेशल 01.12.2024 तक चलती रहेगी।

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

राजु कुमार सिंह
समाजसेवी
सचिव
बिरसा विकलांग उत्थान एवं कल्याण समिति

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रमोद कुमार गुप्ता
जिलाध्यक्ष
लोकहित अधिकार पार्टी

सुनील साहू
लोकहित अधिकार पार्टी

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

अनिल महतो टाईगर
प्रदेश कार्यसमिति सदस्य
सह पूर्व ज़िला परिषद
सदस्य, काँके
भाजपा झारखंड।

---

15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर झारखंड प्रदेश शौंडिक संघ रांची आप सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

उदय साहु
प्रदेश कार्यक्रम प्रभारी
झारखंड प्रदेश शौंडीक संघ, रांची।

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

सुनील साहू
प्रदेश अध्यक्ष
लोकहित अधिकार पार्टी (झारखंड)

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

निखिल कण्डुलना
(महामंत्री)
भाजपा, जिला - खूँटी

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

संजय साहू
(महामंत्री)
भाजपा, जिला - खूँटी

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

हरिनाथ साहू
सामाजिक न्याय के योद्धा
लोकहित अधिकार पार्टी
प्रदेश उपाध्यक्ष सह रांची
जिला प्रभारी

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

राजू कुमार
थाना प्रभारी
जरियागढ़, खूँटी।

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

अरुण संगा
(अध्यक्ष)
युवा कांग्रेस, खूँटी जिला

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

अरुण साबू
(उपप्रमुख)
मुरहू प्रखण्ड (खूँटी)

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

गोवर्धन मानकी
(अध्यक्ष)
मानकी मुंडा संघ-खूँटी

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रियांक भगत
जिला कोषाध्यक्ष (भाजपा) खूँटी

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

विकास जायसवाल
थाना प्रभारी (रनिया),
खूँटी।

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

राजु चतुर्वेदी
महामंत्री
रामगढ़ जिला भाजपा

समस्त देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

एक शुभचिंतक
सेक्टर-4, बोकारो स्टील सिटी।

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ आशुतोष तिग्गा
(प्रभारी)
सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, मुरहू

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ आलोक बिहारी
(प्रभारी)
सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, मारंगहादा

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

उमेश प्रसाद गुप्ता
कांग्रेस,बोकारो जिला
अध्यक्ष

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

सचिन महतो
बोकारो जिला अध्यक्ष
आजसू

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रदीप महतो
बोकारो जिला अध्यक्ष,
जदयू

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

रामध्यान सिंह
(मंडल अध्यक्ष)
भाजपा, गोविंदपुर (खूँटी)

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

मदन गोप
(अध्यक्ष)
प्रखण्ड खूँटी

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

करतार सामंत
(महासचिव)
सेल एससी - एसटी
इम्प्लाइज फेडरेशन

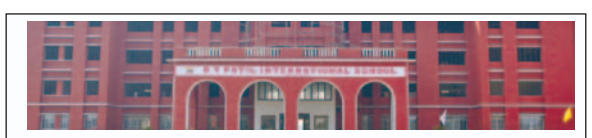

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

अनिल पासवान
जिला अध्यक्ष
लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास)

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

राजेश महतो
नेता जे एल के एम, पूर्व प्रत्याशी बोकारो विधानसभा
सह महामंत्री बोकारो मजदूर समाज

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

विक्रम कुमार महतो
(ज्येष्ठ पुत्र स्व राजेन्द्र महतो)
केंद्रीय अध्यक्ष, जन संघर्ष मोर्चा
धर्मशाला मोड़, चास बोकारो

St. जेवियर स्कूल, बोकारो के प्रिंसिपल और स्टाफ की तरफ से 78 स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

नरेश तिर्की
जिला उपाध्यक्ष
कांग्रेस पार्टी - खूँटी

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

श्री कृष्णा विद्या मंदिर, रामगढ़

आनंद अग्रवाल
चेयरमेन (एडवोकेट)

विमल किशोर जाजो
सचिव

ब्रम्हानंद द्विवेदी
प्रिंसिपल

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

बी के चौधरी
जय झारखण्ड मजदुर समाज
(महामंत्री),
झामूमो केंद्रीय सदस्य ,

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

सोमा उरांव
प्रदेश अध्यक्ष मुखिया संघ, मुखिया
बोडया पंचायत सह मीडिया प्रभारी
जनजातीय सुरक्षा मंच

जरिया गढ़ समस्त राजपरिवार की ओर से स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

लाल विजय नाथ शाहदेव
केंद्रीय उपाध्यक्ष,
अ.भा. झारखण्ड पार्टी

स्वाधीनता दिवस पर विशेषः काला पानी से राष्ट्रीय स्मारक तक पोर्टब्लेयर की सेल्युलर जेल

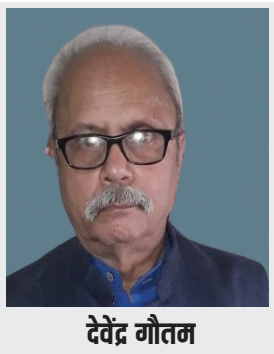

देवेंद्र गौतम

जेल में सेल कोई नई चीज नहीं है। आमतौर पर सभी जेलों में सेल बने होते हैं। खतरनाक कैदियों को उन्हीं में रखा जाता है। उसमें सिर्फ एक दरवाजा होता है। कोई खिड़की नहीं होती। कोई रोशनदान नहीं होता। हवा और धूप आने की कोई गुंजाइश नहीं होती। उनमें रखे जाने वाले कैदियों के हाथों में हथकड़ी, पांवों में बेड़ियां डाल दी जाती हैं। बगल के सेल में कौन बंद है, यह जानने का कोई जरिया नहीं होता। आपसी संवाद का कोई माध्यम नहीं होता। प्रायः हर जेल में कई वार्डों के साथ खतरनाक कैदियों के लिए कुछ सेल बनाए जाते हैं लेकिन पोर्ट ब्लेयर की जेल में सिर्फ सेल थे। कोई वार्ड नहीं था।

ब्रिटिश शासन काल के दौरान सबसे कठोर सजा काला पानी की हुआ करती थी। यह सजा ऐसे कैदियों को मिलती थी जिन्हें ब्रिटिश सरकार अपनी सत्ता के लिए खतरनाक मानती थी। खासतौर पर क्रांतिकारी धारा के स्वतंत्रता सेनानी। उन दिनों काला पानी की सजा होने का मतलब होता था देश व समाज से दूर निर्वासित होकर बर्बर यातनाएं झेलना और अपनी मौत का इंतजार करना। जिसे काला पानी की सजा मिलती थी उसके परिजन उसकी वापसी की उम्मीद छोड़ दिया करते थे।

काला पानी की सजा के लिए अंडमान निकोबार द्वीप समूह की राजधानी पोर्टब्लेयर में सेल्यूलर जेल बनाया गया था। यह आक्टोपस की तरह सात शाखाओं वाली दोमंजिली आकृति थी, जो एक केंद्रीय वाच टावर के चारों तरफ माचिस की तीलियों की तरह फैली थी। इनमें एक भी वार्ड नहीं था। सिर्फ 698 सेल बने थे। सिर्फ सेल होने के कारण इसे सेल्यूलर जेल कहा जाता था। अब इसकी चार शाखाएं नष्ट हो चुकी हैं। सिर्फ तीन शाखाएं बची हैं। इसका निर्माण भारत की मुख्य भूमि से निर्वासित कैदियों द्वारा कराया गया था। इसकी निर्माण सामग्री बर्मा (म्यांमार) से लाई गई थी। इसके परिसर में जेलर और सहायक जेलर सहित अन्य अधिकारियों के लिए भवन के भीतर आवास प्रदान किया गया था। जेल में अलग-अलग कोठरियां 4 फुट चौड़े बरामदे के साथ प्रत्येक शाखा की पूरी लंबाई तक एक पंक्ति में बनाई गई हैं। प्रत्येक सेल का माप साढ़े 13.1/2 फुट७ 7 फुट है, जो विशेष रूप से डिजाइन की गई कुंडी प्रणाली के साथ एक भारी भरकम लोहे के ग्रिल दरवाजे से युक्त है। जेल के निर्माण में लगभग 20,000 घन फीट स्थानीय पत्थरों और कैदियों द्वारा बनाई गई 30,00,000 ईंटों का उपयोग किया गया था। कठोर श्रम के लिए बुनियादी ढांचा अर्थात लोहे की ग्रिल, जंजीरें, बेड़ियां, कोड़े मारने के स्टैंड और तेल मीलें इंग्लैंड से लाई गई थीं। आजादी के 32 साल बाद 11 फरवरी 1979 को इसे राष्ट्रीय स्मारक घोषित किया गया था।

जेल में सेल कोई नई चीज नहीं है। आमतौर पर सभी जेलों में सेल बने होते हैं। खतरनाक कैदियों को उन्हीं में रखा जाता है। उसमें सिर्फ एक दरवाजा होता है। कोई खिड़की नहीं होती। कोई रोशनदान नहीं होता। हवा और धूप आने की कोई गुंजाइश नहीं होती। उनमें रखे जाने वाले कैदियों के हाथों में हथकड़ी, पांवों में बेड़ियां डाल दी जाती हैं। बगल के सेल में कौन बंद है, यह जानने का कोई जरिया नहीं होता। आपसी संवाद का कोई माध्यम नहीं होता। प्रायः हर जेल में कई वार्डों के साथ खतरनाक कैदियों के लिए कुछ सेल बनाए जाते हैं लेकिन पोर्ट ब्लेयर की जेल में सिर्फ सेल थे। कोई वार्ड नहीं था। इसके लिए अंडमान निकोबार द्वीप समूह की राजधानी पोर्ट ब्लेयर के उत्तर-पूर्वी हिस्से में एबरडीन बाजार के निकट छोटी सी पहाड़ी अटलांटा प्वाइंट के शीर्ष को चुना गया था। इसका एकमात्र मकसद क्रांतिकारी धारा के स्वतंत्रता सेनानियों को मानव समाज से अलग रखकर क्रूर यातनाएं देना था।

हालांकि सेल्यूलर जेल कोई नई अवधारणा नहीं थी। दक्षिण अफ्रीका, आस्ट्रेलिया आदि के खतरनाक कैदियों को रखने के लिए इस तरह की जेलें पहले बनाई जा चुकी थीं। ब्रिटिशों ने उन्हीं से प्रेरणा ली थी। संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्वी राज्य स्थित प्रायद्वीप फिलाडेल्फिया में इस अवधारणा की जेल बनी हुई थी। फर्क सिर्फ इतना था कि वहां हर सेल के अंदर शौचालय की सुविधा दी गई थी जबकि पोर्टब्लेयर की सेल्यूलर जेल की सेलों में इस तरह की कोई सुविधा नहीं थी। कैदियों को शौच के लिए सुबह-शाम निर्धारित समय पर बाहर निकाला जाता था। बीच में शौच की जरूरत पड़ी तो सेल के अंदर ही निवृत होना था या फिर सिपाहियों के डंडे खाने थे।

बाक्सः:

क्रांतिकारी विचारधारा के स्वतंत्रता सेनानी ब्रिटिश सरकार के सबसे बड़े दुश्मन

ब्रिटिश सरकार के लिए सबसे खतरनाक थे क्रांतिकारी धारा के स्वतंत्रता सेनानी। पोर्ट ब्लेयर की सेल्यूलर जेल का निर्माण खासतौर पर उन्हीं के हाथों उन्हीं के लिए कराया गया था। वहां कैदियों की मानसिक प्रताड़ना के लिए तरह-तरह के जुल्म ईजाद किए गए थे। अक्सर जेलर कोठरियों को बंद कर उसकी चाबियां अंदर फेंक देते थे लेकिन ताले की बनावट ऐसी थी कि कोई बंदी जेल के अंदर से ताले तक न पहुंच सके। जेल के अंदर हर कोठरी में सिर्फ.एक लकड़ी की चारपाई, एक अल्यूमीनियम की प्लेट, दो बर्तन, एक पानी पीने के लिए और एक शौच के समय इस्तेमाल के लिए और एक कंबल होता था।

बर्तन इतना छोटा होता था कि शौच के लिए काफी नहीं था, इसलिए प्रायः शौच के लिए उस तंग कोठरी के एक कोने का इस्तेमाल करना पड़ता था और फिर उन्हें अपनी ही गंदगी के पास लेटना पड़ता था। ब्रिटिश सरकार यह सुनिश्चित करना चाहती थी कि राजनैतिक कैदियों का एक दूसरे से संपर्क न हो। स्वयं विनायक दामोदर सावरकर को यहां आने के तीन साल बाद पता चला कि उनके बड़े भाई बाबा राव सावरकर इसी जेल में हैं। काला पानी की सजा पाने वाले क्रांतिकारी नेताओं में सावरकर बंधुओं के अलावा फज्ल ए हक खैराबादी, योगेन्द्र शुक्ला, बटुकेश्वर दत्त, सचिंद्र नाथ सान्याल, हरे कृष्ण कोनार, भाई परमानंद, सोहन सिंह, सुबोध राय और त्रिलोकी नाथ चक्रवर्ती, महमूद हसन देवबंदी, हुसैन अहमद मदनी, इंद्र सिंह गढ़वाली और जाफर थानेसरी प्रमुख थे।

पोर्ट ब्लेयर बंगाल की खाड़ी में कोलकाता से करीब 1248 किलोमीटर की दूरी पर स्थित अंडमान निकोबार द्वीप समूह की राजधानी है। 572 द्वीपों के इस समूह पर 1789 में ईस्ट इंडिया कंपनी ने कब्जा कर लिया था। उसके चैथम द्वीप पर नौसेना का अड्डा बनाया जिसे बाद में वाईपर द्वीप में स्थानांतरित कर दिया। कंपनी सरकार उसी समय भारतीय विद्रोहियों के निर्वासन के लिए जेल का निर्माण करना चाहती थी लेकिन तब इसमें सफलता नहीं मिली। मामला ठंढा पड़ गया।

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद जब ब्रिटिश सरकार ने ईस्ट इंडिया कंपनी से भारत की सत्ता अपने हाथों में ले ली तो विद्रोहियों को सबक सिखाने के लिए इस अवधारणा की जेल की शिद्दत से जरूरत महसूस की। उस समय कैदियों का निर्वासन स्थल बनाने के लिए पोर्ट ब्लेयर का चयन किया। अंततः 10 मार्च 1858 को फौजी डॉक्टर और आगरा जेल के वार्डन जेपी वॉकर और जेलर डेविड बेरी की निगरानी में 200 विद्रोही कैदियों का पहला जत्था 10 मार्च 1858 को एक छोटे युद्ध पोत में वहां पहुंचा। जाहिर तौर पर उसमें अधिकतर 1857 के संग्राम में शामिल भारतीय विद्रोही सैनिक थे।

उस समय पोर्ट ब्लेयर में न कोई भवन था न कोई चहारदीवारी थी। चारों तरफ सिर्फ उफान मारता समुद्र था। सिर्फ पथरीली और दलदली जमीन, ऊंचे-ऊंचे घने पेड़ों वाले जंगल थे। धूप नहीं आती थी इसलिए धुंधलका और अंधेरा छाया रहता था। कैदी आजाद थे, लेकिन उनके फरार होने की गुंजाइश नहीं थी।

बाक्सः

पूरे इलाके में था निर्जन और भयावह दृश्य

अंग्रेजों ने विद्रोहियों को कठोर दंड देने के लिए इस स्थल का चयन इसलिए किया था कि इसका अधिकांश भाग निर्जन और भयावह था। इसके कुछ द्वीपों पर कुछ आदमखोर और खतरनाक जनजातियां रहती थीं जिनका बाहरी दुनिया से कोई संपर्क नहीं था। जो बाहरी लोगों को देखते ही मार देती थीं। जमीन पथरीली और दलदली थी जिसमें सांप, बिच्छू, जोंक और जहरीले कीड़ों की भरमार थी। हवा में तरह-तरह की संक्रामक बीमारियों के वायरस थे। वहां खुजली और दाद जैसे एक चर्मरोग का प्रकोप था जिसमें शरीर की चमड़ी फटने और छिलने की शिकायत होती थी। बीमारियां बेशुमार थीं और उनके इलाज, सेहत की देखभाल और घाव भरने का कोई उपाय नहीं था। सबसे बड़ी बात थी कि इन द्वीपों के चारों तरफ समुद्र की गहराई इतनी अधिक थी कि उसमें न स्नान किया जा सकता था न तैर कर पार किया जा सकता था।

फरार होने की कोशिशें

काला पानी की सजा पाने वाले कैदियों के लिए फरार होना असंभव जरूर था लेकिन भारत के क्रांतिकारियों ने अपनी जीवटता के जरिए फरार होने की कोशिशें में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। दानापुर छावनी के बागी सैनिक नारायण पहले कैदी थे जिन्होंने फरार होने की कोशिश की लेकिन पकड़ लिए गए। उन्हें फांसी दे दी गई। इसके बाद 1868 में 238 कैदियों ने फरार होने की कोशिश की। वे भी पकड़ लिए गए। उनमें एक ने आत्महत्या कर ली। 87 लोगों को फांसी दी गई। शेष पर प्रताड़ना बढ़ा दी गई।

26 मार्च 1872 को महताब और चेतन नामक दो कैदी पहली बार फरार होने में सफल रहे। उन्होंने स्वयं नाव बनाई और समुद्र में उतर गए। समुद्री लहरों से जूझते हुए वे पोर्ट ब्लेयर से आगे बढ़े। उन्होंने एक ब्रिटिश जलपोत के कप्तान को बताया कि वे मछुआरे हैं और उनकी नाव नष्ट हो चुकी है। कप्तान के आदेश पर उन्हें जहाज पर बिठाकर लंदन ले जाया गया। वहां स्ट्रैंजर्स होम फॉर एशियाटिक्स में छोड़ दिया गया। वहां दोनों को खिलाया-पिलाया गया। पहनने के लिए नए कपड़े दिए गए। सोने के लिए बिस्तर दिया गया, लेकिन जब वे गहरी नींद में थे तो वहां के मालिक कर्नल ह्यूज ने उनकी फोटो खींच ली और भारत में तैनात अधिकारियों को भिजवा दीं। वहां वे पहचान लिए गए। उनका भेद खुल गया। एक रात जब वे गहरी नींद में थे तो उन्हें बेड़ियों में जकड़ दिया गया और भारत जाने वाले जहाज पर लाद दिया गया। इस तरह की कोशिशें समय-समय पर की जाती रही।

(लेखक बिहार-झारखंड के वरिष्ठ पत्रकार हैं)

संपादकीय

अब सीबीआई जांच

कोलकाता के आरजी कर मेड़िकल कॉलेज व हॉस्पिटल में महिला ड़ॉक्टर के दुष्कर्म व हत्या के मामले की सीबीआई जांच की संस्तुति वाकई अच्छी खबर है। गौर करने वाली बात है कि एक दिन पहले जूनियर ड़ॉक्टरों की हड़ताल और प्रदर्शन के बाद पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने सीबीआई जांच कराने की बात की थी, परंतु पुलिस को सात दिन का समय देने पर प्रदर्शनकारी सवाल भी उठ रहे थे। इस बीच देश भर के अस्पतालों में ड़ॉक्टरों की हड़ताल से बेहाल मरीजों को राहत मिलेगी। क्योंकि लगातार दूसरे दिन भी ड़ॉक्टरों की देशभर में काम नहीं करने के कारण सरकार के लिए भी चुनौतियां बढ़ती जा रही थी। जिस डॉक्टर की हत्य हुई वह 20 किलोमीटर दूर से अस्पताल आती थी। घटना वाली रात ड़्यूटी के बाद वह कांफ्रेंस रूम में आराम करने गई थी। इस मामले में सहायक सुरक्षाकर्मी संजय राय को गिरफ्तार किया गया है। वहीं छात्रों का आरोप है कि जांच में लापरवाही हो रही है और पोस्टमार्टम रिपोर्ट देने में भी पुलिस ने काफी आनाझकानी की। आरोपानुसार मृतका के शरीर पर चोटों के निशान थे और नजर आ रहा था कि बेहद निर्ममतापूर्वक हत्या की गई है। पुलिस को अंदेशा है कि हत्या के बाद बलात्कार के बाद की गई। हालांकि फॉरेंसिक रिपोर्ट के बाद ही आधिकारिक तौर पर कुछ कहा जाएगा। सिर्फ अस्पताल ही नहीं बल्कि राज्य में औरतों की सुरक्षा को लेकर भी लोग नाराज हैं। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड. ब्यूरो के अनुसार 2022 में पश्चिम बंगाल में 1111 बलात्कार के मामले दर्ज किए गए। हालांकि इस मामले में बनर्जी ने कहा है कि वह मौत की सजा के खिलाफ हैं परंतु इस अभियुक्त को मौत की सजा का समर्थन करेंगी। 1973 में मुंबई के प्रसिद्ध केईएम अस्पताल में सफाइकर्मी ने नर्स अरुणा शानबॉग का बलात्कार करने के बाद हत्या का प्रयास किया था।

आइए हम सभी राष्ट्रीय भावना को जगाएं

सुरेश हिन्दुस्थानी

आज 15 अगस्त का पावन दिवस है यानी राष्ट्रीय भाव को व्यक्त करने का दिवस। देश को स्वतंत्र कराने वाले महान सेनानियों के बलिदान को स्मरण करने का और उनके विचार को अपनाने का दिन। अब हमें इस बात का भी स्मरण करना चाहिए कि क्या हमारा देश उन बलिदानियों के विचार को पूरी तरह से आत्मसात कर पाया है, नहीं। जरा विचार कीजिएङ्क कहां चूक हो गई। हम सभी प्रत्येक राष्ट्रीय त्यौहार पर उन बलिदानियों का स्मरण करके उनके द्वारा स्थापित किए गए आदर्शों पर चलने का संकल्प तो लेते हैं, लेकिन ऐसा लगता है कि यह राष्ट्रीय भाव की बातें केवल एक दिन की बात ही बनकर रह जाती है। बाकी के दिनों में हमारा व्यवहार केवल अपने और अपने परिवार तक सीमित हो जाता है। हम छोटी छोटी बातों के लिए सरकारी तंत्र को जिम्मेदार ठहरा देते हैं।

हमें इस राष्ट्रीय पर्व पर अंतर्मन से यही विचार करना होगा कि हमारे राष्ट्रीय कर्तव्य क्या हैं? अगर इस दिशा में गंभीरता पूर्वक और सकारात्मक दृष्टि से चिंतन कर लिया तो स्वाभाविक रूप से हम और हमारा समाज राष्ट्रीय चेतना की भाव धारा को आत्मसात करते हुए अपने व्यवहार को राष्ट्र के अनुकूल बनाने के लिए मार्ग बना सकेगा। आज प्रायः यह देखने में आता है कि हम छोटी सी छोटी ऐसी समस्या के लिए शासन और प्रशासन को दोष देते हैं, जो हमारे स्वयं के द्वारा निर्मित की जाती है। हम जीवन में यह तय कर लें कि हम इस देश के लिए समस्या नहीं समाधान का हिस्सा बनेंगे तो कई समस्याएं अपने आप ही समाप्त हो जाएंगी। भारत के श्रद्धेय महापुरुषों ने इसी के लिए ही तो अपना सर्वस्व समर्पण किया था। महात्मा गांधी ने आजादी मिलने से पूर्व कहा था कि मैं एक ऐसे भारत का निर्माण करूंगा, जिसमें ऊंच नीच का भेद नहीं हो, जिसमें स्वदेशी का भाव प्रथम हो। लेकिन ऐसा लगता है कि महात्मा गांधी के ये विचार राजनीतिक स्वार्थ की बलिवेदी में स्वाहा हो गए हैं। समाज में भेद पैदा करने की दिशाहीन राजनीति का बोलबाला है। जिसके कारण देश कमजोर होता जा रहा है। महात्मा गांधी ने जो दर्शन दिया, वह भारत को मजबूत बनाने का दर्शन है। इसे हम सभी को धारण करना होगा।

हम प्रायः एक गीत सुनते हैं और कभी गुनगुनाते भी हैं। ऐ मेरे वतन के लोगो, जरा आंख में भर लो पानी, जो शहीद हुए हैं उनकी जरा याद करो कुबार्नी। कहने भर के लिए यह एक गीत हैङ्क लेकिन इसके प्रत्येक शब्द में एक प्रेरणा है। जिन महापुरुषों ने भारत की आने वाली पीढ़ियों के लिए आजादी दिलाई, उनके संघर्ष को हम भूल गएङ्क उनकी कुबार्नी को विस्मृत कर दिया। आज हमारी आंखों में उन शहीदों की गाथा सुनकर पानी नहीं आता। इससे ऐसा लगता है कि आज का समाज संवेदना रहित हो गया है। आज के समय में एक बार फिर से अपने मन में राष्ट्र के प्रति संवेदना जगाने की आवश्यकता है।

मेरा सभी देश वासियों से आग्रह है कि आज देश के लिए मर मिटने की आवश्यकता नहीं, देश के लिए जीने की आवश्यकता है। जिसने देश के लिए जीना सीख लियाङ्क वह अपने राष्ट्रीय कर्तव्य की कसौटी पर हर परीक्षा में पास होता जाएगा। जो बलिदान हो गए, उनको और उनके सपने को साकार करने के लिए हम सभी को राष्ट्रीय भाव के साथ आगे बढ़ने की आवश्यकता है। हमें यह भी याद रखना होगा कि हमारी विरासत हमारा गौरव है। यह विरासत भारत के महापुरुषों ने ही बनाई है। हम सभी इस विरासत को बचाने के लिए मन से तैयार हो जाएं, यह राष्ट्र को फिर

से एक मजबूत आधार प्रदान करेगा। जो आने वाली पीढी के लिए एक सुखमय भारत का निर्माण करेगा।

अंत में यही कहना चाहूंगा कि भारत अति प्राचीन राष्ट्र है। यहां सांस्कृतिक विरासत है। इस विरासत को सहेजना भी हमारी जिम्मेदारी है। मैं इस गाने की पंक्तियों के साथ अपनी बात समाप्त करूंगा।

अपनी आजादी को हम हरगिज भुला सकते नहीं।
सर कटा सकते हैं लेकिन सर झुका सकते नहीं।
भारत माता की जय।

चिंतन-मनन

निष्ठा और सत्य

निष्ठा अविभाजित मन, अविभाजित चेतना का स्वभाव है। ईश्वर में तुम्हारी निष्ठा है, उसे जानने का प्रयत्न मत करो। आत्मा में तुम्हारी निष्ठा है, उसे जानने का प्रयत्न मत करो। जिसमें भी तुम्हारी निष्ठा है, उसे जानने की कोशिश न करो। बच्चे को मां में विश्वास है। बच्चा मां को जानने का प्रयत्न नहीं करता, उसे केवल मां में विश्वास है। जब तुममें निष्ठा है, जानने की क्या आवश्यकता है? यदि तुम प्रेम को जानने का विषय बनाते हो, प्रेम लुप्त हो जाता है। ईश्वर, प्रेम, आत्मा और निद्रा समझ के परे हैं। यदि तुम केवल विश्लेषण करते हो, संशय उत्पन्न होता है और निष्ठा खत्म होती है। जिसमें तुम्हारी निष्ठा है, उसे जानने की या विश्लेषण करने की चेष्टा न करो। विश्लेषण दूरी पैदा करता है, संश्लेषण (संकलन) जोड़ता है। निष्ठा संकलन है, जानना विभाजन। निष्ठा और विश्वास में फर्क है, विश्वास हल्का होता है, निष्ठा ठोस, अधिक सबल। हमारे विश्वास बदल सकते हैं मगर निष्ठा अटल होती है। निष्ठा के बिना चेतना नहीं। यह दिये की लौ के समान है। निष्ठा है चेतना की शान्त, स्थायी प्रकृति। निष्ठा चेतना का स्वभाव है। सत्य वह है जो बदलता नहीं। अपने जीवन को देखो और पहचानो कि वह सब जो बदल रहा है, सत्य नहीं। इस दृष्टि से देखने पर तुम पाओगे कि तुम केवल असत्य से घिरे हुए हो। असत्य को पहचानने पर तुम उससे मुक्त होते हो। जब तक तुम असत्य को पहचानोगे नहीं, उससे मुक्त नहीं हो सकते। स्वयं के जीवन के अनुभव तुम्हें तुम्हारे असत्यों की पहचान कराते हैं। जैसे-जैसे जीवन में परिपक्वता आती है, तुम पाते हो कि सभी कुछ असत्य है- घटनाएं, परिस्थितियां, लोग, भावनाएं, विचार, मत-धारणाएं, तुम्हारा शरीर-सभी असत्य है। और तभी सच्चे अर्थ में सत्संग (सत्य का संग) होता है। मां के लिए बच्चा तब तक असत्य नहीं है जब तक बालिग नहीं हो जाता। बच्चे के लिए मिठास असत्य नहीं और किशोर के लिए सैक्स असत्य नहीं। ज्ञान यदि शब्दों तक सीमित है, तो वह असत्य है। परंतु अस्तित्व के रूप में यह सत्य है। प्रेम भावना के रूप में सत्य नहीं, अस्तित्व के रूप में यह सत्य है।

स्वतंत्रता दिवस पर विशेषः आखिर कैसी आजादी के पक्षधर हैं हम?

योगेश कुमार गोयल

अगस्त 15 का दिन प्रत्येक भारतवासी के लिए गौरव का दिन है क्योंकि इसी दिन भारत को अंग्रेजों की दासता से मुक्ति मिली थी। स्वतंत्रता दिवस को लेकर देश के प्रत्येक नागरिक के दिलोदिमाग में एक अलग ही जज्बा और उत्साह समाहित रहता है। हालांकि वर्षों की गुलामी के बाद गुलामी की इन जंजीरों से मिली आजादी को हम किस रूप में संजोकर रख पा रहे हैं, वह सभी के समक्ष है। देश को आजाद हुए पूरे 77 बरस हो चुके हैं लेकिन आजादी के इन 77 वर्षों में लोकतंत्र के पवित्र स्थल संसद और विधानसभाओं के हालात साल दर साल किस कदर बदले हैं, वह भी किसी से छिपा नहीं है, जहां अभद्रता की सीमा पार करते जनप्रतिनिधि अभद्रता की हर हद पार करते नजर आते हैं। प्रतिवर्ष जब देश की स्वतंत्रता के साथ-साथ राष्ट्र की आन-बान और शान के प्रतीक तिरंगे के नीचे खड़े होकर बहुत से ऐसे जनप्रतिनिधियों को भी देश की रक्षा व प्रगति का संकल्प लेते देखते हैं, जो वर्षभर सरेआम लोकतंत्र की धज्जियां उड़ाते देखे जाते हैं तो मन में यही सवाल उठता है कि आखिर ऐसी संकल्प अदायगी से देश को हासिल क्या होता है? आजादी के

दीवानों ने कभी सपने में भी नहीं सोचा होगा कि जिस देश को आजाद कराने के लिए वे इतनी कुर्बानियां दे रहे हैं, आजादी की उसकी तस्वीर ऐसी हो जाएगी।

हालांकि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात देश ने विकास के मार्ग पर तेजी से कदम बढ़ाए और विकास के अनेक सोपान तय किए हैं। तकनीकी कौशल हासिल करते हुए देश अंतरिक्ष तक जा पहुंचा है लेकिन महिलाओं से दुर्व्यवहार की घटनाएं जिस प्रकार लगातार बढ़ रही हैं और समाज में अपराधों की तादाद भी बढ़ रही है, ऐसे में देश की गुलामी का दौर देख चुके कुछ बुजुर्ग तो अब कहते सुने भी जाते हैं कि गुलामी के दिन आज की इस आजादी से कहीं बेहतर थे, जहां अपराधों को लेकर मन में भय व्याप्त रहता था किन्तु कड़े कानून बना दिए जाने के बावजूद अपराधियों के मन में अब किसी तरह का भय नहीं दिखता। देश के कोने-कोने से सामने आते अबोध बच्चियों और महिलाओं के साथ हो रहे अपराधों के बढ़ते मामले आजादी की बेहद शर्मनाक तस्वीर पेश कर रहे हैं। देश में महंगाई सुरसा की तरह बढ़ रही है, मध्यम वर्ग के लिए जीवनयापन दिनों-दिन मुश्किल होता जा रहा है, आतंकवाद की घटनाएं पग पसार रही हैं, आरक्षण की आग रह-रहकर देश को जलाती रहती है। ऐसे हालात निश्चित तौर पर देश के विकास के मार्ग में बाधक बनते हैं। हर कोई सत्ता के इर्द-गिर्द ही अपनी-अपनी राजनीतिक रोटियां सेंकता नजर आ रहा है, कहीं कोई सत्ता बचाने में लगा है तो कहीं कोई इसे गिराने के प्रयासों में। संसद और विधानसभाओं में हंगामेदार तस्वीरें तो अब कोई नई बात नहीं रह गई है।

आजादी के बाद सामाजिक और आर्थिक पहलू पर देश में कमजोर तबके का स्तर सुधारने की नीयत से लागू आरक्षण के राजनीतिक रूप ने देश को आज उस चौराहे पर लाकर खड़ा कर दिया है, जहां समूचा राष्ट्र रह-रहकर जातीय संघर्ष के बीच उलझता दिखाई देता है। स्वार्थपूर्ण राजनीति ने माहौल को इस कदर विकृत कर दिया है, जहां से निकल पाना संभव ही नहीं दिखता। आजादी के बाद के इन साढ़े सात दशकों में महंगाई, भ्रष्टाचार और अपराध इस कदर बढ़ गए हैं कि आम आदमी का जीना दूभर हो गया है। भले ही भ्रष्टाचार पर नकेल कसे जाने के कितने ही ढ़ोल क्यों न पीटे जाते रहें किन्तु वास्तविकता यही है कि आज भी अधिकांश जगहों पर बिना लेन-देन के कार्य सम्पन्न नहीं होते। बड़े नेताओं की तो छोड़ दें, छुटभैया नेताओं की भी चांदी हो चली है। आजादी के बाद लोकतंत्र के इस बदलते स्वरूप ने आजादी की मूल भावना को बुरी तरह तहस-नहस कर डाला है।

आजादी का एक शर्मनाक पहलू यह भी है कि गिने-चुने मामलों को छोड़कर हत्या, भ्रष्टाचार, बलात्कार जैसे संगीन अपराधों से विभूषित जनप्रतिनिधि भी प्रायः सम्मानित जिंदगी जीते रहते हैं। देश के ये बदले हालात आजादी के कौनसे स्वरूप को उजागर कर रहे हैं, विचारणीय है। लोकतंत्र के हाशिये पर खड़ी देश की जनता के लिए इस दिशा में फिर से चिंतन-मंथन करना आवश्यक हो गया है कि वह आखिर किस तरह की आजादी की पक्षधर है? आज की आजादी, जहां तन के साथ-साथ मन भी आजाद है, सब कुछ करने के लिए, चाहे वह वतन के लिए अहितकारी ही क्यों न हो, या उस तरह की आजादी, जहां वतन के लिए अहितकारी हर कदम पर बंदिश हो। आज की आजादी, जहां स्वहित राष्ट्रहित से सर्वोपरि होकर देशप्रेम की भावना को लीलता जा रहा है, या वह आजादी, जहां राष्ट्रहित की भावना सर्वोपरि स्वरूप धारण करते हुए देश को आजाद कराने में गुमनाम लाखों शहीदों के मन में उपजे देशप्रेम का जज्बा सभी में फिर से जागृत कर सके।

भारत का स्वतंत्रता दिवस हर वर्ष 15 अगस्त को मनाया जाता है। सन 1947 में इसी दिन भारत के निवासियों ने ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता प्राप्त की थी। हर साल पूरे जोश और देशभक्ति के साथ स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है। भारत के कई हिस्सों इस दिन परेड और प्रतियोगिताओं का आयोजन होता है और इसके साथ दुनिया भर में स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है। भारत इस वर्ष 77वीं वर्षगांठ मनाएगा।

आइए मनाएं आजादी का 77वां साल

वर्षो तक अंग्रेजों की गुलामी करने के बाद आज ही दिन 15 अगस्त 1947 को हमारा देश भारत आजाद हुआ था। सालों तक हम भारतवासियों ने अंग्रेजों के अत्याचार और अमानवीय व्यवहार को सहा है। जिसके बाद भारत की जनता से खुद को इस अत्याचार से आजाद करने की ठान ली।

सभी एकजुट हो गए और खुद को और अपने देश को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराने का साहस जुटाया।

अंग्रेजों को हमारे देश से बाहर करके अपने देश को आजादी दिलवाने के लिए देश के अनेक वीरों ने प्राणों की बाजी लगाई, गोलियां खाईं और अंत में आखिरकार हम आजादी पाने में सफल हुए।

15 अगस्त की तारीख को हमारा देश आजाद हुआ, इसलिए इस दिन का बहुत अधिक महत्व है। इस दिन हम स्वतंत्रता हुए इसिलिए इसे स्वतंत्रता दिवस कहते हैं।

भारत को आजाद कराने ने बहुत सारे लोगों को योगदान रहा है। कईयों ने अपनी जान की बाजी तक लगाई लेकिन कुछ ऐसे नाम है जिनका योगदान इतना महत्वपूर्ण है कि इन्हें हमाशा याद किया जाता है। इन्हें में से कुछ नाम हैं सुभाषचंद्र बोस, भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद, सरदार वल्लभभाई पटेल, गांधीजी, इत्यादी।

इस साल 2023 को हम अपनी आजादी का 77वां जश्न मनाएंगे। इस दिन को हम भारतवासी बड़े ही उत्साह और प्रसन्नता के साथ मनाते आ रहे हैं। इस दिन सभी विद्यालयों, सरकारी कार्यालयों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है, राष्ट्रगीत गाया जाता है और इन सभी महापुरुषों और शहीदों को श्रद्धांजलि दी जाती है। जिन्होंने स्वतंत्रता के लिए अनेक प्रयत्न किए। इस दिन की खुशी को जाहिर करने के लिए लड्डू और मिठाइयां बांटी जाती हैं।

भारत की राजधानी दिल्ली में हमारे प्रधानमंत्री लाल किले पर राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं। वहां यह त्योहार बड़ी धूमधाम और भव्यता के साथ मनाया जाता है। सभी शहीदों को श्रद्धां?जलि दी जाती है। प्रधानमंत्री राष्ट्र के नाम संदेश देते हैं। अनेक सभाओं और कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

इस दिन का ऐतिहासिक महत्व है। इस दिन की याद आते ही उन शहीदों के प्रति श्रद्धा से मस्तक अपने आप ही झुक जाता है। जिन्होंने स्वतंत्रता के यज्ञ में अपने प्राणों की आहु?ति दी। इसलिए हमारा पुनीत कर्तव्य है कि हम हमारे स्वतंत्रता की रक्षा करें। देश का नाम विश्व में रोशन हो, ऐसा कार्य करें। देश की प्रगति के साधक बनें न? कि बाधक।

हमारा कर्तव्य है कि भारत के नागरिक होने के नाते हम स्वतंत्रता का न तो स्वयं दुरुपयोग करें और न ही दूसरों को करने दें। शहिदों के बलिदान को आने वाले समय में भी जाया न जाने दें और एक भ्रष्टाचार व दुर्गुण रहित देश बनाने में अपने स्तर पर सहयोग करें।

यह है वंदे मातरम् की अमर गाथा, एक गीत जो पवित्र ऋचा बन गया

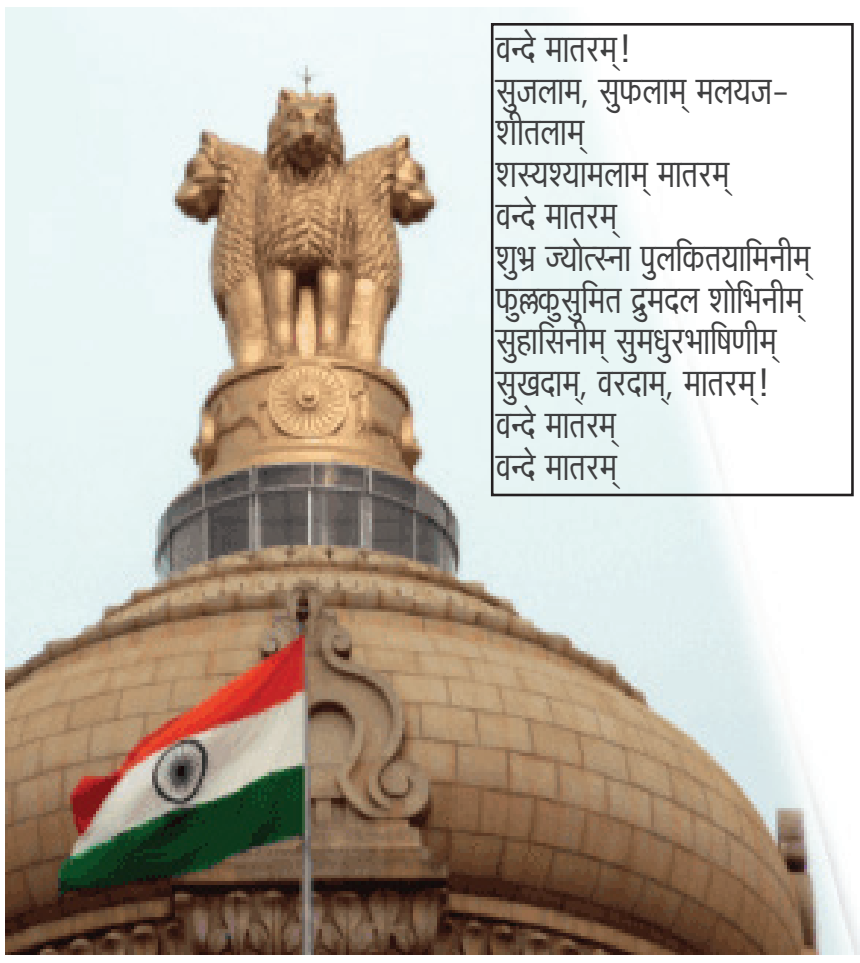

ब्रिटिश शासन के दौरान देशवासियों के दिलों में गुलामी के खिलाफ आग भड़काने वाले सिर्फ दो शब्द थे- 'वंदे मातरम्'। आइए बताते हैं इस क्रांतिकारी, राष्ट्रभक्ति के अजर-अमर गीत के जन्म की कहानी -

बंगाल के महान साहित्यकार श्री बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय के ख्यात उपन्यास 'आनंदमठ' में वंदे मातरम् का समावेश किया गया था। लेकिन इस गीत का जन्म 'आनंदमठ' उपन्यास लिखने के पहले ही हो चुका था। अपने देश को मातृभूमि मानने की भावना को प्रज्वलित करने वाले कई गीतों में यह गीत सबसे पहला है।

'वंदे मातरम' के दो शब्दों ने देशवासियों में देशभक्ति के प्राण फूँक दिए थे और आज भी इसी भावना से 'वंदे मातरम' गाया जाता है। हम यों भी कह सकते हैं कि देश के लिए सर्वोच्च त्याग करने की प्रेरणा देशभक्तों को इस गीत से ही मिली। पीढ़ियाँ बीत गई पर 'वंदे मातरम्' का प्रभाव अब भी अक्षुण्ण है। 'आनंदमठ' उपन्यास के माध्यम से यह गीत प्रचलित हुआ। उन दिनों बंगाल में 'बंग-भंग' का आंदोलन उफान पर था। दूसरी ओर महात्मा गाँधी के असहयोग आंदोलन ने लोकभावना को जाग्रत कर दिया था।

बंग भंग आंदोलन और असहयोग आंदोलन दोनों में 'वंदे मातरम्' ने प्रभावी भूमिका निभाई। स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के लिए यह गीत पवित्र मंत्र बन गया था।

बंकिम बाबू ने 'आनंदमठ' उपन्यास सन् 1880 में लिखा। कलकत्ता की 'बंग दर्शन' मासिक पत्रिका में उसे क्रमशः प्रकाशित किया गया। अनुमान है कि 'आनंदमंठ' लिखने के करीब पाँच वर्ष पहले बंकिम बाबू ने 'वंदे मातरम' को लिख दिया था। गीत लिखने के बाद यह यों ही पड़ा रहा। पर 'आनंदमठ' उपन्यास प्रकाशित होने के बाद लोगों को उसका पता चला।

इस संबंध में एक दिलचस्प किस्सा है। बंकिम बाबू 'बंग दर्शन' के संपादक थे। एक बार पत्रिका का साहित्य कम्पोज हो रहा था। तब कुछ साहित्य कम पड़ गया, इसलिए बंकिम बाबू के सहायक संपादक श्री रामचंद्र बंदोपाध्याय बंकिम बाबू के घर पर गए और उनकी निगाह 'वंदे मातरम्' लिखे हुए कागज पर गई।

कागज उठाकर श्री बंदोपाध्याय ने कहा, फिलहाल तो मैं इससे ही काम चला लेता हूँ। पर बंकिम बाबू तब गीत प्रकाशित करने को तैयार नहीं थे। यह बात सन् 1872 से 1876 के बीच की होगी। बंकिम बाबू ने बंदोपाध्याय से कहा कि आज इस गीत का मतलब लोग समझ नहीं सकेंगे। पर एक दिन ऐसा आएगा कि यह गीत सुनकर सम्पूर्ण देश निद्रा से जाग उठेगा।

इस संबंध में एक किस्सा और भी प्रचलित है। बंकिम बाबू दोपहर को सो रहे थे। तब बंदोपाध्याय उनके घर गए। बंकिम बाबू ने उन्हें 'वंदे मातरम्' पढ़ने को दिया। गीत पढ़कर बंदोपाध्याय ने कहा, 'गीत तो अच्छा है, पर अधिक संस्कृतनिष्ठ होने के कारण लोगों की जुबान पर आसानी से चढ़ नहीं सकेगा।' सुनकर बंकिम बाबू हँस दिए। वे बोले, 'यह गीत सदियों तक गाया जाता रहेगा।' सन् 1876 के बाद बंकिम बाबू ने बंग दर्शन की संपादकी छोड़ दी।

सन् 1875 में बंकिम बाबू ने एक उपन्यास 'कमलाकांतेर दफ्तर' प्रकाशित किया। इस उपन्यास में 'आभार दुर्गोत्सव' नामक एक कविता है। 'आनंदमठ' में संत-गणों को संकल्प करते हुए बताया गया है।

तिरंगे का छठवां स्वरूप बना भारत का राष्ट्रध्वज

15 अगस्त 1947 को देश आजादी मिली थी, इसी खुशी इस दिन हम सभी स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं। स्वतंत्रता दिव का उत्सव कई रूपों जैसे, झाकी परेड, सांस्कृतिक कार्यक्रम और भाषण आदि में मनाया जाता है। लेकिन इस उत्सव में तिरंगा ही एक ऐसी चीज है जो इस उत्सव को पहचान दिलाती है। 15 अगस्त के दिन इमारतों, सार्वजनिक स्थलों, स्कूलों और दफ्तरों में आपको तिरंगा लगा मिल जाएगा। इसका सम्मान प्रत्येक भारतीय अपने अपने तरीके से करता है। कोई इस दिन अपने शरीर पर तिरंगे का टैटू बनवाता है तो कोई तिरंग या तीन रंगों वाला कपड़ा पहनता है तो कोई तिरंगे के रंग को मेकअप के रूप में इस्तेमाल करता है। तो आइए आज हम आपको बताते हैं क्या है तिरंगे का इतिहास। आजादी के पहले और फिर आजादी के बाद भारत का झंडा कैसा था और तीन रंगों में आखिर में कैसे फाइनल हुआ-

तिरंगा का इतिहास

पहला झंडा

पहला भारतीय झंडा 7 अगस्त 1906 में कलकत्ता के पारसी बगान स्कवॉयर में फहराया गया था। इस झंडे में हरे, पीले और लाल रंग की तीन पट्टियां थी। झंडे की बीच की पट्टी पर वंदेमातरम लिखा हुआ था। नीचे की पट्टी पर सूर्य और चांद का सांकेतिक चिन्ह बना हुआ था।

दूसरा झंडा

भारत का दूसरा झंडा 1907 में मैडम कामा और निर्वासित क्रांतिकारियों के उनका संगठन ने पेरिस में फहराया था। यह झंडे पहले वाले से ज्यादा अलग नहीं है। इसमें हरे, पीले और नारंगी रंग की तीन पट्टियां थी। इस झंड़े की बीच की पट्टी पर भी वंदेमातरम लिखा हुआ था। नीचे की पट्टी पर सूर्य और चांद का सांकेतिक चिन्ह बना हुआ था।

तीसरा झंडा

इस भारतीय झंडे को डॉ. एनी बेसेंट और लोकमान्य तिलक ने होम रूल मूवमेंट 1917 के दौरान फहराया था। इस झंडे में ऊपर की तरफ यूनियन जैक था। झंडे में बिग डिपर या सप्तर्षि नक्षत्र और अर्धचंद्र चंद्र और सितारा भी था।

चौथा झंडा

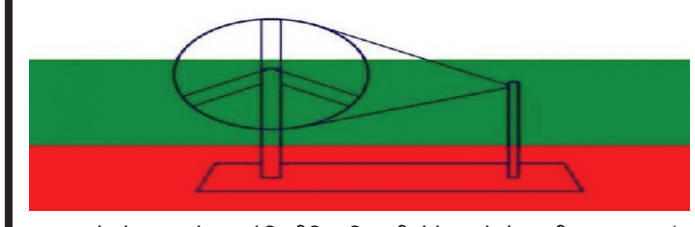

1916 में लेखक और भूभौतिकीविद् पिंगाली वेंकैया ने देश की एकजुटता के लिए एक झंडा डिजाइन किया था। इस झंडे को डिजाइन करने से पहले उन्होंने महात्मा गांधी से अनुमति ली थी। गांधीजी ने उनको भारत का आर्थिक उत्थान दर्शाते हुए झंडे में चरखा शामिल करने की सलाह दी थी। गांधी जी ने इस झंड़े को 1921 में फहराया था। इसमें सबसे ऊपर सफेद, बीच में हरी और सबसे नीचे लाल रंग की पट्टियां थी। ये झंडा सभी समुदायों का प्रतीक माना जाता था।

पांचवां झंडा

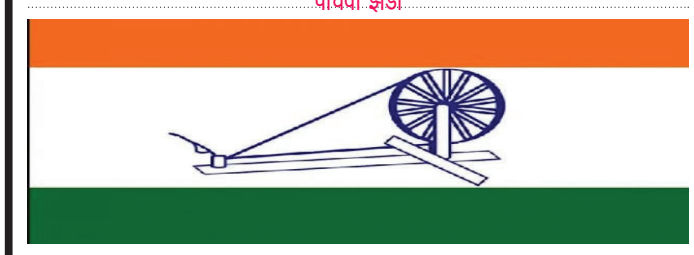

1931 में भारतीय राष्ट्रीय ध्वज में ऐतिहासिक बदलाव किया गया था। कांग्रेस कमेटी बैठक में पास हुए एक प्रस्ताव में भारत के तिंरगे को मंजूरी मिली थी। इस तिरंगे में केसरिया रंग ऊपर, सफेद बीच में और सबसे नीचे हरे रंग की पट्टी थी। सफेद रंग की पट्टी पर नीले रंग का चरखा बना हुआ था।

छठा झंडा

आजाद भारत के लिए संविधान सभा ने इसी भारतीय झंडे को स्वीकार कर लिया था। हालांकि चरखे की जगह इसमें सम्राट अशोक के धर्म चक्र शामिल कर लिया गया था। यही झंडा 1947 से भारत का राष्ट्रीय ध्वज है।

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

सुजीत कुमार
महाप्रबंधक एनके एरिया

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

मो:- 9431161105
7004221815
सरिता फार्मा

हमारे यहाँ सफेद दाग, दिनाय, कोढ़, बाल, नाखून, चेहरा खुजली, चमड़ा बिमारी का इलाज एवं दवा मिलता है।
अस्पताल गेट ब्राम्बे, राँची - 835205

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रभावित प्रतिरोध मंच, एनके एरिया
नागेश्वर महतो अध्यक्ष
सुनील सिंह संरक्षक

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

अमेरिकन पब्लिक स्कूल मांडर
निर्देशक :नवसद आलम प्रिंसिपल : जावेद अहमद

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

बिनोदीत तिग्गा
जीप सदस्य मांडर मध्य

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

अनिल गोप
समाज सेवी चान्हो

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

कृष्ण मोहन ताम्रकार
भाजपा नेता चान्हो

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

बघवार अकेडमी चान्हो
अशोक बघवार निर्देशक अरूण बघवार प्रिंसिपल

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

राजेश मुंडा
समाज सेवी हातमा मांडर

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

सतानन्द सिंह
भाजपा बिजुपडा मंडल अध्यक्ष चान्हो

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रो (डॉ) कुनुल कांडिर
प्राचार्या, मांडर महाविद्यालय, मांडर

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

शीला देवी
मुखिया राय पंचायत

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

सेवा उरांव
मुखिया चूरी पूर्वी पंचायत

78वाँ स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएँ

ST. MARY'S ACADEMY
Kataiya, Chanho (Near Chanho Sewa sadan)

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

संतोष पाहन
जेई चान्हो

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

मकेश्वर राम महली
प्रखंड अध्यक्ष, झा मु मो, चान्हो

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

सुरेन्द्र यादव
समाजसेवी खलारी

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

राजेश मुंडा
समाज सेवी हातमा मांडर

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

शिव उरांव
झारखण्ड प्रदेश अध्यक्ष, सम्पूर्ण भारत क्रांति पार्टी

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

मुकेश सोनी
भाजपा युवा मोर्चा बिजुपडा मंडल अध्यक्ष चान्हो

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ0 परमेश्वर भगत
(पूर्व डीडीसी सह समाजसेवी एवं भावी विधायक प्रत्याशी, मांडर विधानसभा क्षेत्र)

संघर्ष करें, शिक्षित बनें और संगठित रहें

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

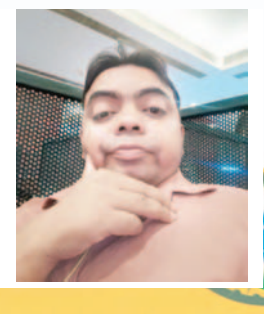

रोहित कुमार
चान्हो

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

झारखंडी भाषा खतियान संघर्ष समिति

जयराम महतो
केंद्रीय अध्यक्ष
दीपक महतो
रांची जिला उपाध्यक्ष
मुन्ना गंझू
रांची जिला एस टी मोर्चा अध्यक्ष

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ सुशील कुमार मिंज
, प्राचार्य शहीद वीर बुधु भगत इंटर कॉलेज, चान्ह

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

संदीप कुमार एस
सीनियर कमांडेंट

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

झारखंड पार्टी

अनिल कुमार पासवान
केंद्रीय महासचिव एससी मोर्चा
सुनील कुमार पासवान
खलारी प्रखंड सचिव
नगीना देवी
खलारी महिला प्रखंड अध्यक्ष

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

मुंसफ अंसारी
निदेशक, सनराइज पब्लिक स्कूल, बीजूपाड़ा, चान्हो

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

सुरेन्द्र यादव
समाजसेवी खलारी

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

पवन लकड़ा
प्रधानाध्यापक प्राथमिक विद्यालय चूरी

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

संदीप कुमार एस
सीनियर कमांडेंट

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

अनुज कुमार
परियोजना पदाधिकारी चूरी

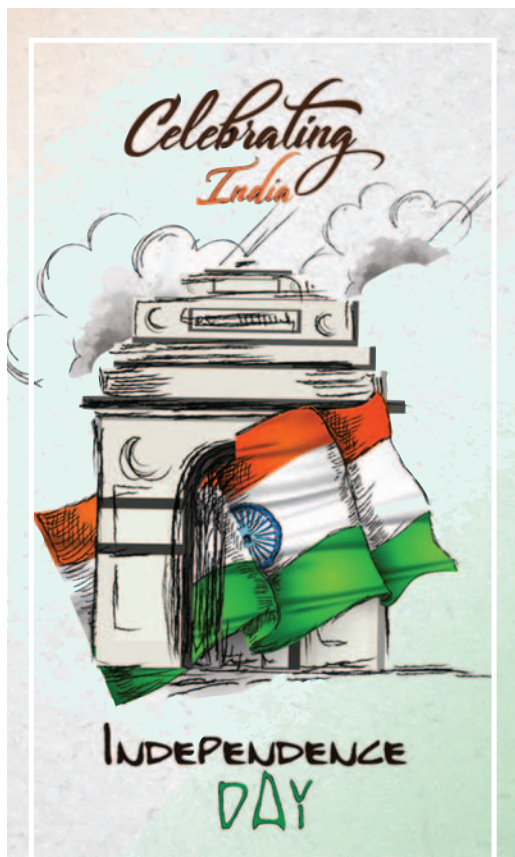

वंदे मातरम की अमर गाथा, एक गीत जो पवित्र ऋचा बन गया

वन्दे मातरम!
सुजलाम, सुफलाम मलयज-शीतलाम
शस्यश्यामलाम मातरम
वन्दे मातरम
शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम
फुल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनीम
सुहासिनीम सुमधुरभाषिणीम
सुखदाम, वरदाम, मातरम!
वन्दे मातरम वन्दे मातरम

ब्रिटिश शासन के दौरान देशवासियों के दिलों में गुलामी के खिलाफ आग भड़काने वाले सिर्फ दो शब्द थे- 'वंदे मातरम' । आइए बताते हैं इस क्रांतिकारी, राष्ट्रभक्ति के अजर-अमर गीत के जन्म की कहानी
बंगाल के महान साहित्यकार श्री बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय के ख्यात उपन्यास 'आनंदमठ' में वंदे मातरम का समावेश किया गया था। लेकिन इस गीत का जन्म 'आनंदमठ' उपन्यास लिखने के पहले ही हो चुका था। अपने देश को मातृभूमि मानने की भावना को प्रज्वलित करने वाले कई गीतों में यह गीत सबसे पहला है। 'वंदे मातरम' के दो शब्दों ने देशवासियों में देशभक्ति के प्राण फूँक दिए थे और आज भी इसी भावना से 'वंदे मातरम' गाया जाता है। हम यों भी कह सकते हैं कि देश के लिए सर्वोच्च त्याग करने की प्रेरणा देशभक्तों को इस गीत से ही मिली। पीढ़ियाँ बीत गई पर 'वंदे मातरम' का प्रभाव अब भी अक्षुण्ण है। 'आनंदमठ' उपन्यास के माध्यम से यह गीत प्रचलित हुआ। उन दिनों बंगाल में 'बंग-भंग' का आंदोलन उफान पर था। दूसरी ओर महात्मा गाँधी के असहयोग आंदोलन ने लोकभावना को जाग्रत कर दिया था। बंग भंग आंदोलन और असहयोग आंदोलन दोनों में 'वंदे मातरम' ने प्रभावी भूमिका निभाई। स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के लिए यह गीत पवित्र मंत्र बन गया था।
बंकिम बाबू ने 'आनंदमठ' उपन्यास 1880 में लिखा। कलकत्ता की 'बंग दर्शन' मासिक पत्रिका में उसे क्रमशः प्रकाशित किया गया। अनुमान है कि 'आनंदमंठ' लिखने के करीब पाँच वर्ष पहले बंकिम बाबू ने 'वंदे मातरम' को लिख दिया था। गीत लिखने के बाद यह यों ही पड़ा रहा। पर 'आनंदमठ' उपन्यास प्रकाशित होने के बाद लोगों को उसका पता चला। इस संबंध में एक दिलचस्प किस्सा है। बंकिम बाबू 'बंग दर्शन' के संपादक थे। एक बार पत्रिका का साहित्य कम्पोज हो रहा था। तब कुछ साहित्य कम पड़ गया, इसलिए बंकिम बाबू के सहायक संपादक श्री रामचंद्र बंदोपाध्याय बंकिम बाबू के घर पर गए और उनकी निगाह 'वंदे मातरम' लिखे हुए कागज पर गई। कागज उठाकर श्री बंदोपाध्याय ने कहा, फिलहाल तो मैं इससे ही काम चला लेता हूँ। पर बंकिम बाबू तब गीत प्रकाशित करने को तैयार नहीं थे। यह बात 1872 से 1876 के बीच की होगी। बंकिम बाबू ने बंदोपाध्याय से कहा कि आज इस गीत का मतलब लोग समझ नहीं सकेंगे। पर एक दिन ऐसा आएगा कि यह गीत सुनकर सम्पूर्ण देश निद्रा से जाग उठेगा। इस संबंध में एक किस्सा और भी प्रचलित है। बंकिम बाबू दोपहर को सो रहे थे। तब बंदोपाध्याय उनके घर गए। बंकिम बाबू ने उन्हें 'वंदे मातरम' पढ़ने को दिया। गीत पढ़कर बंदोपाध्याय ने कहा, 'गीत तो अच्छा है, पर अधिक संस्कृतनिष्ठ होने के कारण लोगों की जुबान पर आसानी से चढ़ नहीं सकेगा।' सुनकर बंकिम बाबू हँस दिए। वे बोले, 'यह गीत सदियों तक गाया जाता रहेगा।' 1876 के बाद बंकिम बाबू ने बंग दर्शन की संपादकी छोड़ दी। 1875 में बंकिम बाबू ने एक उपन्यास 'कमलाकांतेर दफ्तर' प्रकाशित किया। इस उपन्यास में 'आभार दुर्गोत्सव' नामक एक कविता है। 'आनंदमठ' में संत-गणों को संकल्प करते हुए बताया गया है। उसकी ही आवृत्ति 'कमलाकांतेर दफ्तर' के कमलकांत की भूमिका निभाने वाले चरित्र के व्यवहार में दिखाई देती है। धीर-गंभीर देशप्रेम और मातृभूमि की माता के रूप में कल्पना करते हुए बंकिम बाबू गंभीर हो गए और अचानक उनके मुँह से 'वंदे मातरम' शब्द निकले। यही इस अमर गीत की कथा है।
1896 में कलकत्ता में काँग्रेस का राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ। उस अधिवेशन की शुरुआत इसी गीत से हुई और गायक कौन थे पता है आपको? गायक और कोई नहीं, महान साहित्यकार स्वयं गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर थे। कितना भाग्यशाली गीत है यह, जिसे सबसे पहले गुरुदेव टैगोर ने गाया। यह भी माना जाता है कि बंकिम बाबू एक कीर्तनकार द्वारा गाए गए एक कीर्तन गीत 'एसो एसो बंधु माघ आँचरे बसो' को सुनकर बेहद प्रभावित हुए। गीत सुनकर गुलामी की पीड़ा का उन्होंने तीव्र रूप से अनुभव किया। इस एक गीत ने भारतीय युवकों को एक नई दिशा-प्रेरणा दी, स्वतंत्रता संग्राम का महान उद्देश्य दिया। मातृभूमि को सुजलाम्-सुफलाम बनाने के लिए प्रेरित किया। 'वंदे मातरम।' इन दो शब्दों ने देश को आत्मसम्मान दिया और देशप्रेम की सीख दी। हजारों वर्षों से सुप्त पड़ा यह देश इस एक गीत से निद्रा से जाग उठा। तो ऐसी दिलचस्प कहानी है वंदे मातरम गीत की।

भारत का स्वतंत्रता दिवस

आजादी यह एक ऐसा शब्द है जो प्रत्येक भारतवासी की रगों में खून बनकर दौड़ता है। स्वतंत्रता हर मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। तुलसीदास जी ने कहा है 'पराधीन सपनेहुं सुखनाहीं' अर्थात पराधीनता में तो स्वप्न में भी सुख नहीं है। पराधीनता तो किसी के लिए भी अभिशाप है। जब हमारा देश परतंत्र था उस समय विश्व में न हमारा राष्ट्रीय ध्वज था, न हमारा कोई संविधान था।
आज हम पूर्ण स्वतंत्र हैं तथा पूरे विश्व में भारत की एक पहचान हैं। हमारा संविधान आज पूरे विश्व में एक मिसाल है। जिसमें समस्त देशवासियों को समानता का अधिकार है। हमारा राष्ट्रीय ध्वज भी प्रेम, भाईचारे व एकता का प्रतीक है। भारत वर्ष के महान संविधान रचयिता बाबा साहेब डॉ.भीमराव आंबेडकर ने संविधान में विशेष रूप से भारत के प्रत्येक नागरिक को आजादी का अहसास कराया है अथवा विशेष अधिकार दिए हैं। जब से हमारा भारत आजाद हुआ है तभी से आर्थिक व तकनीकी रूप से हमारा देश सम्पन्नता की ऊंचाइयों तक पहुंचा है।
आज पूरे विश्व में भारत आशा की किरण बनकर सूर्य की भांति आकाश में चमक रहा है, यह सब आजाद भारत में ही संभव हुआ है। हमें ये आजादी आसानी से नहीं मिली है, इसके लिए देश के शूरवीरों व आजादी के मतवालों ने अपना बलिदान देकर दिलाई है, हमें उनका सदैव आभार मानना चाहिए। आज हम आजादी की खुली हवा में सांस ले रहे हैं, वह सब भारत माता के उन सपूतों की याद दिलाता है, जिन्होंने अपना सर्वस्व देश के नाम कर दिया था। भारत के प्रसिद्ध विद्वानों, कवियों, इतिहासकारों अथवा लेखकों ने भारत का सामाजिक रूप से सुधार करके भारत की आजादी में चार चांद लगाए।
आज भारत पूर्व विश्व में अतुल्य है। सामाजिक कुप्रथाओं का अंत हुआ, गरीबों का आर्थिक शोषण समाप्त हुआ तथा गांवों की दयनीय स्थिति में तेजी से सुधार हुआ। आज भारत सहित पूरा विश्व आतंकवाद से जूझ रहा है, जो आजादी के नाम पर एक सबसे बड़ा कलंक है। यह तो हम सभी जानते हैं कि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता। कुछ लोग आतंकवाद का चोला पहन लेते हैं तथा निर्दोष लोगों की हत्या करते हैं, देशवासियों में भय का माहौल पैदा करते हैं। जिसके परिणामस्वरूप जनता में सरकारी नीतियों व देश के रक्षातंत्र के प्रति भ्रम उत्पन्न होता है। हम सभी भारतीय को चाहिए कि आतंकवाद के खिलाफ एकमत तथा एकजुट होकर सरकार को सहयोग करें।
यह हमारा सौभाग्य है कि हमने भारत की पुण्यभूमि पर जन्म लिया और आजादी के सुंदर वातावरण में सांस ली। देशप्रेम एक पवित्र भाव है जो हर नागरिक में होना अनिवार्य है। कुछ लोग अपने स्वार्थपूर्ति के लिए हमारे पवित्र देश को भ्रष्टाचार की चादर में समेट रहे हैं और देश की भोलीभाली जनता को गुमराह कर रहे हैं। हमें एकजुट होकर ऐसे भ्रष्ट लोगों से सावधान रहने की आवश्यकता है तथा भ्रष्टाचार रूपी रावण का अतिशीघ्र दहन करना चाहिए।
भारत वर्ष को पहले की भांति सोने की चिड़िया बनाना है तथा आजादी का सही अर्थ समझना है, प्रत्येक भारतीय को अपने अधिकारों से ज्यादा अपने कर्तव्यों का पालन करना होगा, तभी हमारा देश पूरे विश्व में एक महाशक्ति बनकर सामने आएगा। यही हमारा मुख्य ध्येय है। इस आंदोलन में हमारे भारतवासियों ने कई सत्याग्रह आंदोलन किए, लाठियां भी खाईं, कई बार जेल भी गए, और फिर अंग्रेजों को हमारा देश छोड़कर जाने पर मजबूर कर दिया। इस तरह 15 अगस्त 1947 का दिन हमारे लिए स्वर्णिम दिन, इंडिपेंडेंस डे बना। हम, हमारा देश स्वतंत्र हो गए। इसीलिए यह दिन 1947 से लेकर आज तक सभी बड़े उत्साह और प्रसन्नता के साथ मनाते हैं।
भारत माता की जय, हम सब एक हैं, वंदे मातरम।

भारतीय तिरंगे का इतिहास

प्रत्येक स्वतंत्र राष्ट्र का अपना एक ध्वज होता है। यह एक स्वतंत्र देश होने का संकेत है। भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को इसके वर्तमान स्वरूप में 22 जुलाई 1947 को आयोजित भारतीय संविधान सभा की बैठक के दौरान अपनाया गया था, जो 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजों से भारत की स्वतंत्रता के कुछ ही दिन पूर्व की गई थी। इसे 15 अगस्त 1947 और 26 जनवरी 1950 के बीच भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपनाया गया और इसके पश्चात भारतीय गणतंत्र ने इसे अपनाया। भारत में ''तिरंगे'' का अर्थ भारतीय राष्ट्रीय ध्वज है। भारतीय राष्ट्रीय ध्वज में तीन रंग की क्षैतिज पटि्टयां हैं, सबसे ऊपर केसरिया, बीच में सफेद ओर नीचे गहरे हरे रंग की पट्टी और ये तीनों समानुपात में हैं। ध्वज की चौड़ाई का अनुपात इसकी लंबाई के साथ 2 और 3 का है। सफेद पट्टी के मध्य में गहरे नीले रंग का एक चक्र है। यह चक्र अशोक की राजधानी के सारनाथ के शेर के स्तंभ पर बना हुआ है। इसका व्यास लगभग सफेद पट्टी की चौड़ाई के बराबर होता है और इसमें 24 तीलियां है।

तिरंगे का विकास

यह जानना अत्यंत रोचक है कि हमारा राष्ट्रीय ध्वज अपने आरंभ से किन-किन परिवर्तनों से गुजरा। इसे हमारे स्वतंत्रता के राष्ट्रीय संग्राम के दौरान खोजा गया या मान्यता दी गई। भारतीय राष्ट्रीय ध्वज का विकास आज के इस रूप में पहुंचने के लिए अनेक दौरों में से गुजरा। एक रूप से यह राष्ट्र में राजनैतिक विकास को दर्शाता है। हमारे राष्ट्रीय ध्वज के विकास में कुछ ऐतिहासिक पड़ाव इस प्रकार हैं:
प्रथम राष्ट्रीय ध्वज 7 अगस्त 1906 को पारसी बागान चौक (ग्रीन पार्क) कलकत्ता में फहराया गया था जिसे अब कोलकाता कहते हैं। इस ध्वज को लाल, पीले और हरे रंग की क्षैतिज पटि्टयों से बनाया गया था। द्वितीय ध्वज को पेरिस में मैडम कामा और 1907 में उनके साथ निर्वासित किए गए कुछ क्रांतिकारियों द्वारा फहराया गया था (कुछ के अनुसार 1905 में)। यह भी पहले ध्वज के समान था सिवाय इसके कि इसमें सबसे ऊपरी की पट्टी पर केवल एक कमल था किंतु सात तारे सप्तऋषि को दर्शाते हैं। यह ध्वज बर्लिन में हुए समाजवादी सम्मेलन में भी प्रदर्शित किया गया था।
तृतीय ध्वज 1917 में आया जब हमारे राजनैतिक संघर्ष ने एक निश्चित मोड लिया। डॉ.एनी बीसेंट और लोकमान्य तिलक ने घरेलू शासन आंदोलन के दौरान इसे फहराया। इस ध्वज में 5 लाल और 4 हरी क्षैतिज पटि्टयां एक के बाद एक और सप्तऋषि के अभिविन्यास में इस पर बने सात सितारे थे। बांयी और ऊपरी किनारे पर (खंभे की ओर) यूनियन जैक था। एक कोने में सफेद अर्धचंद्र और सितारा भी था। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सत्र के दौरान जो 1921 में बेजवाड़ा (अब विजयवाड़ा) में किया गया यहां आंध्र प्रदेश के एक युवक ने एक झंडा बनाया और गांधी जी को दिया। यह दो रंगों का बना था। लाल और हरा रंग जो दो प्रमुख समुदायों अर्थात हिन्दू और मुस्लिम का प्रतिनिधित्व करता है। गांधी जी ने सुझाव दिया कि भारत के शेष समुदाय का प्रतिनिधित्व करने के लिए इसमें एक सफेद पट्टी और राष्ट्र की प्रगति का संकेत देने के लिए एक चलता हुआ चरखा होना चाहिए। वर्ष 1931 ध्वज के इतिहास में एक यादगार वर्ष है। तिरंगे ध्वज को हमारे राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपनाने के लिए एक प्रस्ताव पारित किया गया । यह ध्वज जो वर्तमान स्वरूप का पूर्वज है, केसरिया, सफेद और मध्य में गांधी जी के चलते हुए चरखे के साथ था। तथापि यह स्पष्ट रूप से बताया गया इसका कोई साम्प्रदायिक महत्व नहीं था और इसकी व्याख्या इस प्रकार की जानी थी।
22 जुलाई 1947 को संविधान सभा ने इसे मुक्त भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपनाया। स्वतंत्रता मिलने के बाद इसके रंग और उनका महत्व बना रहा। केवल ध्वज में चलते हुए चरखे के स्थान पर सम्राट अशोक के धर्म चक्र को दिखाया गया। इस प्रकार कांग्रेस पार्टी का तिरंगा ध्वज अंततः स्वतंत्र भारत का तिरंगा ध्वज बना।

ध्वज के रंग

भारत के राष्ट्रीय ध्वज की ऊपरी पट्टी में केसरिया रंग है जो देश की शक्ति और साहस को दर्शाता है। बीच में स्थित सफेद पट्टी धर्म चक्र के साथ शांति और सत्य का प्रतीक है। निचली हरी पट्टी उर्वरता, वृद्धि और भूमि की पवित्रता को दर्शाती है।

चक्र

इस धर्म चक्र को विधि का चक्र कहते हैं जो तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व मौर्य सम्राट अशोक द्वारा बनाए गए सारनाथ मंदिर से लिया गया है। इस चक्र को प्रदर्शित करने का आशय यह है कि जीवन गतिशील है और रुकने का अर्थ मृत्यु है।

ध्वज संहिता

26 जनवरी 2002 को भारतीय ध्वज संहिता में संशोधन किया गया और स्वतंत्रता के कई वर्ष बाद भारत के नागरिकों को अपने घरों, कार्यालयों और फैक्टरी में न केवल राष्ट्रीय दिवसों पर, बल्कि किसी भी दिन बिना किसी रुकावट के फहराने की अनुमति मिल गई। अब भारतीय नागरिक राष्ट्रीय झंडे को शान से कहीं भी और किसी भी समय फहरा सकते है। बशर्ते कि वे ध्वज की संहिता का कठोरता पूर्वक पालन करें और तिरंगे की शान में कोई कमी न आने दें। सुविधा की दृष्टि से भारतीय ध्वज संहिता, 2002 को तीन भागों में बांटा गया है। संहिता के पहले भाग में राष्ट्रीय ध्वज का सामान्य विवरण है। संहिता के दूसरे भाग में जनता, निजी संगठनों, शैक्षिक संस्थानों आदि के सदस्यों द्वारा राष्ट्रीय ध्वज के प्रदर्शन के विषय में बताया गया है। संहिता का तीसरा भाग केन्द्रीय और राज्य सरकारों तथा उनके संगठनों और अभिकरणों द्वारा राष्ट्रीय ध्वज के प्रदर्शन के विषय में जानकारी देता है।

26 जनवरी 2002 विधान पर आधारित कुछ नियम और विनियमन हैं कि ध्वज को किस प्रकार फहराया जाए:

क्या करें

- राष्ट्रीय ध्वज को शैक्षिक संस्थानों (विद्यालयों, महाविद्यालयों, खेल परिसरों, स्काउट शिविरों आदि) में ध्वज को सम्मान देने की प्रेरणा देने के लिए फहराया जा सकता है। विद्यालयों में ध्वज आरोहण में निष्ठा की एक शपथ शामिल की गई है।
- किसी सार्वजनिक, निजी संगठन या एक शैक्षिक संस्थान के सदस्य द्वारा राष्ट्रीय ध्वज का अरोहण/प्रदर्शन सभी दिनों और अवसरों, आयोजनों पर अन्यथा राष्ट्रीय ध्वज के मान सम्मान और प्रतिष्ठा के अनुरूप अवसरों पर किया जा सकता है।
- नई संहिता की धारा 2 में सभी निजी नागरिकों अपने परिसरों में ध्वज फहराने का अधिकार देना स्वीकार किया गया है।

क्या न करें

- इस ध्वज को सांप्रदायिक लाभ, पर्दे या वस्त्रों के रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता है। जहां तक संभव हो इसे मौसम से प्रभावित हुए बिना सूर्योदय से सूर्यास्त तक फहराया जाना चाहिए।
- इस ध्वज को आशय पूर्वक भूमि, फर्श या पानी से स्पर्श नहीं कराया जाना चाहिए। इसे वाहनों के हुड, ऊपर और बगल या पीछे, रेलों, नावों या वायुयान पर लपेटा नहीं जा सकता।
- किसी अन्य ध्वज या ध्वज पट्ट को हमारे ध्वज से ऊंचे स्थान पर लगाया नहीं जा सकता है। तिरंगे ध्वज को वंदनवार, ध्वज पट्ट या गुलाब के समान संरचना बनाकर उपयोग नहीं किया जा सकता।

स्वतंत्रता और गणतंत्र दिवस में क्या अंतर होता है? कैसे फहराया जाता है झंडा

भारत में हर साल दो राष्ट्रीय पर्व का जश्न मनाया जाता है 26 जनवरी और 15 अगस्त। अधिकतर लोग इन दोनों दिवस को एक ही समझते है या इन दोनों का महत्व उन्हें एक ही लगता है। भारत इस साल 77वां स्वतंत्रता दिवस मनाने जा रहा है। चलिए जानते हैं इन दोनों में क्या प्रमुख अंतर होता है....

स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त

200 साल की ब्रिटिश गुलामी के बाद भारत 15 अगस्त 1947 को आज़ाद हुआ था। देश की आज़ादी के रूप में हम हर साल 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस मनाते है। प्रति वर्ष इस दिवस की थीम भी निर्धारित होती है।

गणतंत्र दिवस 26 जनवरी

15 अगस्त 1947 में आजादी के बाद भारत के पास अपना कानून नहीं था। भारत के नियम-कानून ब्रिटिश कानून के अनुसार थे। इसलिए आजादी के बाद संबिधान बनाने की प्रक्रिया शुरू हुई और 26 जनवरी 1950 को संविधान लागू किया गया।

26 जनवरी या 15 अगस्त किस दिन होती है परेड आयोजित

15 अगस्त के दिन परेड का आयोजन नहीं होता है। बल्कि 26 जनवरी पर सैनिकों, अर्धसैनिक बलों परेड होती है। इस परेड में अलग-अलग सेवा के सैनिक सुंदर प्रस्तुति करते दिखते हैं। साथ ही आप इस दिन विभिन्न राज्य की सुंदर झांकियां भी देखते हैं।

स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस पर झंडा फहराने में क्या अंतर है?

पहला अंतर: 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर झंडे को नीचे से रस्सी द्वारा खींचकर ऊपर ले जाया जाता है, फिर खोलकर फहराया जाता है, जिसे ध्वजारोहण कहा जाता है, क्योंकि यह 15 अगस्त 1947 की ऐतिहासिक घटना को सम्मान देने हेतु किया जाता है, उस समय प्रधानमंत्री जी ने ऐसा किया था। संविधान में इसे अंग्रेजी में Flag Hoisting (ध्वजारोहण) कहा जाता है।
जबकि 26 जनवरी गणतंत्र दिवस के अवसर पर झंडा ऊपर ही बंधा रहता है, जिसे खोलकर फहराया जाता है, संविधान में इसे Flag Unfurling (झंडा फहराना) कहा जाता है।
दूसरा अंतर: 15 अगस्त के दिन प्रधानमंत्री जो कि केंद्र सरकार के प्रमुख होते हैं, वे ध्वजारोहण करते हैं क्योंकि स्वतंत्रता के दिन भारत का संविधान लागू नहीं हुआ था और राष्ट्रपति जो कि राष्ट्र के संवैधानिक प्रमुख होते हैं, उन्होंने पदभार ग्रहण नहीं किया था। इस दिन शाम को राष्ट्रपति अपना संदेश राष्ट्र के नाम देते हैं। जबकि 26 जनवरी जो कि देश में संविधान लागू होने के उपलक्ष्य में मनाया जाता है, इस दिन संवैधानिक प्रमुख राष्ट्रपति झंडा फहराते हैं।
तीसरा अंतर: स्वतंत्रता दिवस के दिन लालकिले से ध्वजारोहण किया जाता है। जबकि गणतंत्र दिवस के दिन राजपथ पर झंडा फहराया जाता है।
चौथा अंतर: पूरे भारत में गणतंत्र दिवस ज्यादा धूमधाम से मनाया जाता है। जबकि गणतंत्र दिवस के मुकाबले स्वतंत्रता दिवस पर ऐसा कुछ नहीं होता।
पांचवां अंतर: गणतंत्र दिवस पर देश अपनी सैन्य ताकत और सांस्कृतिक विलक्षणता को दिखाता है।
जबकि स्वतंत्रता दिवस के दिन ऐसा कुछ नहीं होता।
छठा अंतर: 26 जनवरी यानी गणतंत्र दिवस के दिन समारोह में मुख्य अतिथि आते हैं। जबकि स्वतंत्रता दिवस पर ऐसा नहीं होता है।
सातवां अंतर: 26 जनवरी और 15 अगस्त दोनों ही राष्ट्रीय पर्व हैं। 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस कहा जाता है और 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस कहा जाता है।

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

रामप्रवेश कुमार

डीएसपी (प्रोबेशन), खूँटी

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रो. जे. किड़ो

(प्रभारी प्रधानाध्यापिका)
बिरसा महाविद्यालय, खूँटी

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

कमल किशोर सिंह

अंचल अधिकारी
गम्हरिया, सरायकेला

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

परमेश्वर भगत

जिला परिषद सदस्य,
पश्चिमी (मांडर)

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

विनोद नाग

(उपाध्यक्ष) भाजपा , जिला - खूँटी

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

कासीनाथ महतो

विधायक प्रतिनिधि, खूँटी

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

पथ प्रमंडल, सरायकेला

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

आदिल अजीम

जिला परिषद सदस्य
चान्हो (पश्चिमी) सह

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

मसीह गुड़िया

(अध्यक्ष) जिला परिषद, खूँटी

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ अनील उराँव

(उपाधीक्षक) सदर अस्पताल - खूँटी

कार्यालय : नगर पंचायत सरायकेला

पैलेस रोड, सरायकेला-833219 email:npsaraikella1@gmail.com

नगर पंचायत का नगरवासियों से सादर अपील-

- Single Use Plastics का उपयोग निकाय क्षेत्र में पूर्णत प्रतिबंधित है. इसका उपयोग न करें।
- निकाय क्षेत्र में भवन निर्माण करने से पूर्व नक्शा पारित कराये एवं स्वीकृत नक्शे के अनुरूप ही निर्माण कार्य करायें।
- नाली में कचड़ा न डालें, कूड़ेदान का व्यवहार करे, नाली का अतिक्रमण कर उसके ऊपर निर्माण कार्य ना करें।
- अपनी दुकान अथवा मकान के बाहर डस्टबीन व्यवहार हेतु रखे। डोर-टू-डोर कचरा गाडी में कचरे दें।
- सरकारी भूमि का अतिक्रमण कर यातायात बाधित न करें। अपने वाहन को व्यवस्थित ढंग से पार्किंग करें।
- सड़क के किनारे बिल्डिंग मेटेरियल, कोल डस्ट, बालू गिट्टी, इंट अथवा कचडा न रखें।
- नगर पंचायत क्षेत्र में हुए जन्म अथवा मृत्यु की सूचना ससमय अवश्य दर्ज करायें।
- ससमय नगर पंचायत होल्डिंग टैक्स, जलकर, दुकान किराया एवं अन्य कर का भुगतान करे। नये भवनों का कर निर्धारण हेतु Self Assessment Form (SAF) अवश्य भरें।
- निकाय से अपने व्यवसाय का Trade Licence निश्चित रूप से बनावें।
- नगर पंचायत क्षेत्र में होर्डिंग लगाकर विज्ञापन करने हेतु नगर पंचायत से स्वीकृति अवश्य ले लें।
- नगर पंचायत से अनुमति के बिना सड़क कटिंग न करें।
- स्वच्छ सर्वेक्षण की मार्गदर्शिका के अनुसार सभी नागरिकों से अपील है कि बेहतर शहर को स्थान प्राप्त कराने हेतु नगर पंचायत सरायकेला का सहयोग है।

निवेदक-
प्रशासक
नगर पंचायत सरायकेला

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

शालिक राम पाण्डे

निर्देशक, चान्हो

प्रभापुंज पब्लिक स्कूल

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

वरुण रजक

डीएसपी, खूँटी

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

विनय गुप्ता

मंडल अध्यक्ष
भाजयुमो , गोविंदपुर-खूँटी

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

समीर मड़की

(अध्यक्ष)
पुलिस मेंस एसोशिएशन, खूंटी

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

डॉक्टर चुमनु तिर्की

पशुपालन विभाग चिकित्सा
पदाधिकारी चान्हो

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

नीतू कुजुर

समाज सेवी मांडर

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

देवन्ती उरांव

टाँगर मुखिया चान्हो

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

जगराम उरांव

जीप सदस्य प्रतिनिधि
मांडर

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

अल्ताफ खान

बाल संरक्षण पदाधिकारी, खूँटी

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

बिशेश्वर उराँव

(सचिव) पुलिस मैंस
एसोशिएशन, खूँटी

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

मिनेश शाही

समाज सेवी बसकी मांडर

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

मंजू कच्छप

प्रधानाध्यापिका, टाना
भगत आवासीय उच्च
विद्यालय सोनचिपी चान्हो

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

एतवारी कुजुर

जीप सदस्य
पूर्वी मांडर

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

नरेश कुमार यादव

निर्देशक चोरिया चान्हो

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

माँ राजेश्वरी हार्डवेयर

बेलाहाथी रोड, खूँटी

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

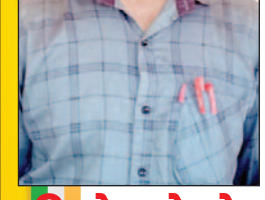

विनोद टोप्पो

क्रियेटिव हार्ट स्कूल
गुटुवा निर्देशक

दैनिक बिहान भारत परिवार की ओर से स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

कार्यालय : असैनिक शल्य चिकित्सक सह मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी खूंटी

स्वतंत्रता दिवस 2024 के शुभ अवसर पर जिला स्वास्थ्य समिति खूंटी की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं

ज्ञापांक : 2022 दिनांक 14-8-2024

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

महेन्द्र भगत

(समाजसेवी)
भगतसिंह चौक - खूँटी

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

सुशील संगा

(जिला उपाध्यक्ष)
कांग्रेस पार्टी - खूँटी

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

जॉन मिरन मुण्डा

झीकपानी जिला परिषद सदस्य सह
केंद्रीय अध्यक्ष आदिवासी विकास किसान पार्टी

आजादी कहें या स्वतंत्रता ये ऐसा शब्द है जिसमें पूरा आसमान समाया है। आजादी एक स्वाभाविक भाव है या यूँ कहें कि आजादी की चाहत मनुष्य को ही नहीं जीव-जन्तु और वनस्पतियों में भी होती है। सदियों से भारत अंग्रेजों की दासता में था, उनके अत्याचार से जन-जन त्रस्त था। खुली फिजा में सांस लेने को बेचैन भारत में आजादी का पहला बिगुल 1857 में बजा किन्तु कुछ कारणों से हम गुलामी के बंधन से मुक्त नहीं हो सके। वास्तव में आजादी का संघर्ष तब अधिक हो गया] जब बाल गंगाधर तिलक ने कहा कि स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

विश्व विजयी तिरंगा प्यारा..

झंडा ऊँचा रहे हमारा, विश्व विजयी तिरंगा प्यारा..

यह गीत भारत का हर बच्चा गुनगुनाता है.. बड़े ही शान से। आखिर क्या बात है इस ध्वज में जिसने आज़ादी के परवानों में एक नया जोश भर दिया था और जो आज भी हर भारतीय को अपने गरिमामय इतिहास की याद दिलाता है और विभिन्नता में एकता वाले इस देश को एक सूत्र में बाँधे हुए है। हर स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस पर लाल क़िले की प्राचीर पर राष्ट्रीय ध्वज को बड़े ही आदर और सम्मान के साथ फहराया जाता है। देश के प्रथम नागरिक से लेकर आम नागरिक तक इसे सलामी देता है। 21 तोपों की सलामी से सेना इसका सम्मान करती है। किसी भी देश का झंडा उस देश की पहचान होता है। तिरंगा हम भारतीयों की पहचान है। राष्ट्रीय झंडे ने पहली बार आज़ादी की घोषणा के कुछ ही दिन पहले 22 जुलाई 1947 को पहली बार अपना वो रंग रूप पाया जो आज तक कायम है। हमारा राष्ट्रीय ध्वज तीन रंगों से बना है इसलिए हम इसे तिरंगा भी कहते हैं। सबसे ऊपर केसरिया रंग फिर सफ़ेद और सबसे नीचे हरा। बीच में गहरे नीले रंग का चक्र बना है जिसमें 24 चक्र हैं जिसे हम अशोक चक्र के नाम से जानते हैं। इस प्रतीक को सारनाथ में अशोक महान के स्तंभ से लिया गया है। तिरंगे की बनावट पर हमारे देश में काफ़ी ध्यान दिया जाता है क्यों कि ये हमारे सम्मान से जुड़ा हुआ है। हर तिरंगे में अशोक चक्र श्वेत रंग के तीन चौथाई भाग में ही होना चाहिए। राष्ट्रीय ध्वज खादी के कपड़े का होना चाहिए। आज जो ध्वज हमारे देश की पहचान है उसे इस रूप में ढालने वाले थे पिंगली वेंकैया।

तिरंगे में इन रंगों की क्या महत्ता है ये जानना बहुत ज़रूरी है। केसरिया यानी भगवा रंग वैराग्य का रंग है। हमारे आज़ादी के दीवानों ने इस रंग को सबसे पहले अपने ध्वज में इसलिए सम्मिलित किया जिससे आने वाले दिनों में देश के नेता अपना लाभ छोड़ कर देश के विकास में खुद को समर्पित कर दें। जैसे भक्ति में साधु वैराग ले मोह माया से हट भक्ति का मार्ग अपनाते हैं। श्वेत रंग प्रकाश और शांति के प्रतीक के रूप में लिया गया। हरा रंग प्रकृति से संबंध और संपन्नता दर्शाता है, और केंद्र में स्थित अशोक चक्र धर्म के 24 नियमों की याद दिलाता है।

हमारे राष्ट्रीय ध्वज का इतिहास भी बहुत रोचक है। 20वी सदी में जब हमारा देश ब्रिटिश सरकार की गुलामी से मुक्ति पाने के लिए संघर्ष कर रहा था, तब स्वतंत्रता सेनानियों को एक ध्वज की ज़रूरत महसूस हुई क्यों कि ध्वज स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति का प्रतीक रहा है। सन् 1904 में विवेकानंद की शिष्या सिस्टर निवेदिता ने पहली बार एक ध्वज बनाया जिसे बाद में सिस्टर निवेदिता ध्वज से जाना गया। यह ध्वज लाल और पीले रंग से बना था। पहली बार तीन रंग वाला ध्वज सन् 1906 में बंगाल के बँटवारे के विरोध में निकाले गए जलूस में शचीन्द्र कुमार बोस लाए। इस ध्वज में सबसे ऊपर केसरिया रंग, बीच में पीला और सबसे नीचे हरे रंग का उपयोग किया गया था। केसरिया रंग पर 8 अधखिले कमल के फूल सफ़ेद रंग में थे। नीचे हरे रंग पर एक सूर्य और चंद्रमा बना था। बीच में पीले रंग पर हिंदी में वंदेमातरम् लिखा था। सन् 1908 में सर भीकाजी कामा ने जर्मनी में तिरंगा झंडा लहराया और इस तिरंगे में सबसे ऊपर हरा रंग था, बीच में केसरिया, सबसे नीचे लाल रंग था। इस झंडे में धार्मिक एकता को दर्शाते हुए हरा रंग इस्लाम के लिए और केसरिया हिंदू और सफ़ेद ईसाई व बौद्ध दोनों धर्मों का प्रतीक था। इस ध्वज में भी देवनागरी में वंदेमातरम् लिखा था और सबसे ऊपर 8 कमल बने थे। इस ध्वज को भीकाजी कामा, वीर सावरकर और श्यामजी कृष्ण वर्मा ने मिलकर तैयार किया था। प्रथम विश्व युद्ध के समय इस ध्वज को बर्लिन कमेटी ध्वज के नाम से जाना गया क्यों कि इसे बर्लिन कमेटी में भारतीय क्रांतिकारियों द्वारा अपनाया गया था। सन् 1916 में पिंगली वेंकैया ने एक ऐसे ध्वज की कल्पना की जो सभी भारतवासियों को एक सूत्र में बाँध दे। उनकी इस पहल को एस.बी. बोमान जी और उमर सोमानी जी का साथ मिला और इन तीनों ने मिल कर नेशनल फ़्लैग मिशन का गठन किया। वेंकैया ने राष्ट्रीय ध्वज के लिए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी से सलाह ली और गांधी जी ने उन्हें इस ध्वज के बीच में अशोक चक्र रखने की सलाह दी जो संपूर्ण भारत को एक सूत्र में बाँधने का संकेत बने। पिंगली वेंकैया लाल और हरे रंग के की पृष्ठभूमि पर अशोक चक्र बना कर लाए पर गांधी जी को यह ध्वज ऐसा नहीं लगा कि जो संपूर्ण भारत का प्रतिनिधित्व कर सकता। राष्ट्रीय ध्वज में रंग को लेकर तरह-तरह के वाद विवाद चलते रहे। अखिल भारतीय संस्कृत कांग्रेस ने सन 1924 में ध्वज में केसरिया रंग और बीच में गदा डालने की सलाह इस तर्क के साथ दी कि यह हिंदुओं का प्रतीक है। फिर इसी क्रम में किसी ने गेरुआ रंग डालने का विचार इस तर्क के साथ दिया कि ये हिंदू, मुसलमान और सिख तीनों धर्म को व्यक्त करता है।

काफ़ी तर्क-वितर्क के बाद भी जब सब एकमत नहीं हो पाए तो सन् 1931 में अखिल भारतीय कांग्रेस के ध्वज को मूर्तरूप देने के लिए 7 सदस्यों की एक कमेटी बनाई गई। इसी साल कराची कांग्रेस कमेटी की बैठक में पिंगली वेंकैया द्वारा तैयार ध्वज, जिसमें केसरिया, श्वेत और हरे रंग के साथ केंद्र में अशोक चक्र स्थित था, को सहमति मिल गई। इसी ध्वज के तले आज़ादी के परवानों ने कई आंदोलन किए और 1947 में अंग्रेज़ों को भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया। आज़ादी की घोषणा से कुछ दिन पहले फिर कांग्रेस के सामने ये प्रश्न आ खड़ा हुआ कि अब राष्ट्रीय ध्वज को क्या रूप दिया जाए इसके लिए फिर से डॉ. राजेंद्र प्रसाद के नेतृत्व में एक कमेटी बनाई गई और तीन सप्ताह बाद 14 अगस्त को इस कमेटी ने अखिल भारतीय कांग्रेस के ध्वज को ही राष्ट्रीय ध्वज के रूप में घोषित करने की सिफ़ारिश की। 15 अगस्त 1947 को तिरंगा हमारी आज़ादी और हमारे देश की आज़ादी का प्रतीक बन गया। राष्ट्रीय ध्वज हमारे देश की पहचान है इसलिए इसे हर भारतीय सम्मान दे ये तो ज़रूरी है ही कोई भी व्यक्ति इसकी गरिमा को धूमिल ना करे इसके लिए भारतीय कानून में कुछ धाराएँ बनाई गई है। फ्लैग कोड इंडिया - 2002 में राष्ट्रीय ध्वज से जुड़ी कुछ खास बातों का ज़िक्र किया गया है जिसे हम भारतीयों को जानना ज़रूरी है। सन् 2002 के पहले आम जनता राष्ट्रीय दिवस को छोड़ किसी और दिन इसे किसी सार्वजनिक स्थान पर नहीं लगा सकती थी। सिर्फ़ सरकारी कार्यालयों में ही इसे लगाया जा सकता था। सन् 2002 में भारत के जाने माने उद्योगपति नवीन जिंदल ने अपने कार्यालय के ऊपर राष्ट्रीय ध्वज लगाया था जिसके लिए उन्हें सूचित किया गया कि उन्हें ऐसा करने पर कानूनी कार्यवाही से गुज़राना होगा। इसके विरोध में उन्होंने दिल्ली उच्च न्यायालय में एक जन हित याचिका इस बाबत दायर की कि भारत की आम जनता को सम्मान के साथ राष्ट्रीय ध्वज लहराने और उसे प्यार देने का नागरिक अधिकार है। यह मामला उच्च न्यायालय से उच्चतम न्यायालय में गया और न्यायालय ने भारत सरकार को इस मामले पर विचार करने के लिए एक कमेटी बिठाने की सलाह दी। अंत में भारतीय मंत्रालय ने एक संवैधानिक संशोधन कर सभी भारतवासियों को साल के 365 दिन राष्ट्रध्वज सम्मान के साथ लगाने का अधिकार दिया। इसी के साथ ध्वज के सम्मान की बात भी स्पष्ट कर दी गई कि ध्वज फहराने के समय किस आचरण संहिता का ध्यान रखा जाना चाहिए। राष्ट्रीय ध्वज कभी भूमि पर नहीं गिरना चाहिए और ना ही धरातल के संपर्क में आना चाहिए। सन् 2005 के पहले तक इसे वर्दियों और परिधानों में उपयोग में नहीं लाया जा सकता था, लेकिन सन 2005 में फिर एक संशोधन के साथ भारतीय नागरिकों को इसका अधिकार दिया गया।

लेकिन इसमें ध्यान रखने वाली बात ये है ये किसी भी वस्त्र पर कमर के नीचे नहीं होना चाहिए। राष्ट्रीय ध्वज कभी अधोवस्त्र के रूप में नहीं पहना जा सकता है।

स्वतंत्रता दिवस का महत्व

एक बार फिर स्वतंत्रता दिवस आ गया। आजादी के बाद से लगातार आ रहा है, फिर भी पहचानना पड़ता है। 15 अगस्त हमारा राष्ट्रीय पर्व है। इसका बहुत महत्व है। इसका सबसे ज्यादा महत्व फिल्मवालों के लिए है। यदि यह दिन नहीं होता तो वे देशभक्ति की बातें किस माध्यम से कहते यह विचारणीय प्रश्न है। फिल्म वालों ने इस दिन के माध्यम से इतनी देशभक्ति दिखाई है कि खुद देश की आत्मा तक कांप उठी है। मनोज कुमार का योगदान इस क्षेत्र में अतुलनीय है। उन्होंने भारत कुमार नामक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी देश को निजी तौर पर सौंपा है। सिनेमा वालों ने भी उनकी तर्ज पर क्रांतिवीर नाना पाटेकर फिल्म इंडस्ट्री को प्रदान किया है। मनोज कुमार ने आर्ट और कमर्शियल सिनेमा के बीच देशभक्ति सिनेमा की एक और समांतर रेखा भी खींची है। ये भी फिल्मी रेखा की तरह अपने जमाने में खूब चली है। कई फिल्म निर्माताओं और नायकों ने भी अपना जीवन इसी देशभक्ति के नाम पर होम किया है। वो बात अलग है कि इस होम करने की प्रक्रिया में केवल उनके होम ही बड़े बंगलों में बदले हैं। सिनेमा वालों के समान ही कैसिट कंपनी वालों के लिए भी इस दिन का महत्व है। वे इस दिन इतनी-इतनी आवाजों में इतनी-इतनी देशभक्ति पूरे देश में वितरित करते हैं कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक हर कान को काम मिल जाता है। देशभक्ति का एक-एक गाना तक इतनी भयानक आवाजों में पेश किया जाता है कि बेचारा गाना तक अपनी हालत को लेकर द्रवित हो जाता है, आम आदमी भी लगे हाथों इसी बहाने देश के प्रति द्रवित होने का कर्त्तव्य निपटा लेता है। तो 15 अगस्त हमारा राष्ट्रीय त्योहार है। इस दिन का बड़ा महत्व है। इस दिन का हलवाइयों में भी बेहद महत्व है। वे दुकान के लिए बूंदी के नियमित उत्पादन के अलावा अतिरिक्त उत्पादन भी करते हैं। सरप्लस उत्पादन रूटीन उपभोक्ताओं के अलावा आस-पड़ोस के स्कू लों के लिए होता है। कुछ होशियार हलवाई कई स्कूलों तक पहुंच बनाकर आर्थिक स्वतंत्रता का महत्व भी समझ जाते हैं। इस दिन का सरकार के लिए भी बेहद महत्व है। सरकार बड़े सरकारी भवनों से लेकर सारे विभागों के रोशन कर देती है। इस माध्यम से दिन की रोशनी में स्वतंत्रता दिवस ठीक से नहीं समझ सके लोगों से उम्मीद की जाती है कि वे अब रात की रोशनी में इस बारे में समझशील बनें। सरकार कई आयोजन करवाती है। फिर छुट्टी देकर देशभक्ति के अतिरिक्त महत्व से भी जनता को अवगत करवाती है। कर्मचारियों के दिलों में भी इस दिन का बड़ा महत्व है। वे इस दिन को कितना आदर देते हैं यह किसी से छिपा नहीं है। वे पूरे दिन अपनी नींद निकालते हैं। घरेलू काम निपटाते हैं। आलू-प्याज लाकर घर में भरते हैं। किराना लाकर पटकते हैं। दोपहर को टीवी पर आ रही देशभक्ति की पिक्चर के माध्यम देश के प्रति चिंतन का कार्यक्रम भी निपटा देते हैं। इस दिन बच्चों को कूटने के लिए कुछ समय भी अलग से रखा जाता है। फिर सुकून से दोस्त के घर गप्पें लड़ाने के लिए निकल जाते हैं। इस पूरे कार्य के दौरान इस दिन का महत्व उनके दिमाग में लगातार बना रहता है। यह दिन महत्वपूर्ण है ही। सबके लिए इसका अत्यंत महत्व है। इसी तरह बुजुर्गो के लिए इस दिन का अत्यधिक महत्व है। पूरा दिन वे टीवी देखने, अखबार पढ़ने और खांसने की गतिविधि को समर्पित करते हैं, जैसा कि वे रोज करते हैं। इस दिन अतिरिक्त गतिविधि के अंतर्गत खांसी के साथ गौरवशाली अतीत की जुगलबंदी पेश करते हैं। बेटा खांसी के चलते उनसे दूरी बनाता है, पोता अतीत की बीमारी से बचने के लिए उनसे कन्नी काटता है। दोनों ही मामलों में उनकी वर्तमान को कोसने की व्यस्तता बढ़ जाती है। बच्चे तक इसके महत्व से परिचित हैं। हर बच्चे को पता है कि इस दिन स्कूल केवल कुछ देर के लिए ही खुलता है। वहां मिठाई मिलती हैं। फिर स्कूल की छुट्टी हो जाती है। मांओं-पत्नियों के लिए इस दिन का अलग ही महत्व है। उनके लिए यह दिन खटने के लिए होता है। पति-बेटे बैठे-बैठे लगातार पोहे-पकौड़े की फरमाइशें करते रहते हैं। वे न तो अपना पंसदीदा सीरियल देख पाती हैं न ही पड़ोसन से गप्प लगाने का नियमित आयोजन समपन्न कर पाती हैं। इस तरह पूरे परिवार के लिए इस दिन का बड़ा महत्व है। पूरे देश के लिए ही महत्व है। सारा राष्ट्र ही इसके महत्व से पूरी तरह अवगत होता है। देश का एक-एक प्राणी तक इस बारे में अपनी जानकारियों का विस्तार करता है। इतने महत्वपूर्ण दिन के बारे में जानते-जानते मामूली सी बात जानने से चूक जाते हैं कि इस दिन हजारों शहीदों के बलिदान से हमें आजादी मिली थी।

सांस्कृतिक विरासत का अंग अशोक स्तंभ

हमारी सांस्कृतिक विरासत का ही एक अंग है, हमारा राष्ट्रीय चिह्न, जिसे हमने सम्राट अशोक की विरासत के रूप में प्राप्त किया है। सारनाथ में जहाँ गौतम बुद्ध ने सर्वप्रथम अपने ज्ञान के प्रकाश से संसार को आलोकित किया था, वहाँ सम्राट अशोक ने शिलालेख और यह चिह्न स्थापित किया था। यहीं से इस चिह्न को राष्ट्रीय के रूप में अपनाया गया। यह चिह्न सम्राट अशोक और महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं की स्मृति को तो ताजा करता ही है, वरन इस चिह्न में हमारी असीम सांस्कृतिक विरासत भी झलकती है। यद्यपि यह विवरण प्राप्त नहीं है कि सम्राट अशोक के काल में इस चिह्न का निर्माण और प्रचलन कब हुआ परंतु यह निश्चित है कि इस चिह्न का संबंध सम्राट अशोक से है और संभव है इस चिह्न का प्रचलन पहले से रहा हो। यह इस चिह्न में निहित गूढ़ अर्थों से ज्ञात होता है, जो ज्ञान की सर्वोच्च पराकाष्ठा को प्रदर्शित करते हैं।

सांकेतिक भाषा में विचारों और भावनाओं को चिह्नों या चित्रों के माध्यम से प्रकट करने का इतिहास अति प्राचीन है। द इसी सांकेतिकता का उपयोग सम्राट अशोक के इस चिह्न में भी परिलक्षित होता है। सामान्य दृष्टि से इस चिह्न को देखकर यही कहा जाएगा कि सिंह, शक्ति और गौरव के प्रतीक तथा आधार पर स्थित अश्व, ऊर्जा एवं गति, वृषभ, कठिन परिश्रम एवं धैर्य तथा इन दोनों के मध्य स्थित चक्र धर्म को प्रदर्शित करता है। परंतु इस चिह्न का गूढ़ार्थ ऋग्वेद के अध्ययन से ज्ञात होता है, जिसे संसार में मानव सभ्यता का सबसे प्राचीनतम ग्रंथ माना जाता है। इस ग्रंथ की भाषा भी सांकेतिक है। संक्षेप में यदि कहा जाए तो यह चिह्न सृष्टि की निरंतरता, जीवन और उस पर एक आधारभूत परम मौलिक ऊर्जा के नियंत्रण को प्रदर्शित करता है।

सृष्टि निर्माण और पृथ्वी पर जीवन का कुछ उद्देश्य भी है अथवा नहीं। इस संबंध में जिज्ञासा मानव का आदि स्वभाव रहा है। आज आधुनिक वैज्ञानिक युग में भी, मनुष्य इस संबंध में उतना ही जिज्ञासु है, जितना हजारों वर्ष पहले था जब वेद अस्तित्व में आए। सृष्टि निर्माण संबंधी प्रश्न ऋग्वेद के दशम मंडल में उठाए गए हैं तथा उनका युक्तियुक्त उत्तर देने का प्रयत्न ज्ञान के अनुसार किया गया है। और अंत में अपने ज्ञान की सीमाओं को स्वीकार करते हुए यह कहा गया है कि यह सृष्टि जहाँ से उत्पन्न हुई, अथवा इसका कोई आधार है या नहीं, यह सब कुछ वही जानता है जो व्योम में सर्वत्र व्याप्त है अथवा हो सकता है वह भी न जानता हो। (ऋ10-129-7) अर्थात् यहाँ जब स्पष्ट किया जा रहा है कि जितना ज्ञान हमें प्राप्त है, उनके अनुसार हमने सृष्टि के निर्माण का वर्णन किया है।

सृष्टि निर्माण प्रक्रिया का वर्णन नारदीय सूक्तों में मिलता है। प्राचीन मत में जगत की सृष्टि एक प्राकृतिक उत्पत्ति मानी गई हैं। सृष्टि निर्माण प्रकृति की जिन शक्तियों के द्वारा होता है, उन्हें देव तुल्य मानकर यह बताया गया कि समस्त देवताओं ने मिलकर जगत की उत्पत्ति की। नारदीय सूक्तों में ज्ञान वृद्धि के साथ जगत की उत्पत्ति को आधारभूत परम मौलिक ऊर्जा से क्रमशः विकसित बताते हुए प्रकृति की शक्तियों को इसमें कारण और सहायक माना है। इसी आधारभूत परम मौलिक ऊर्जा को परम पुरूष, विश्वकर्मा, प्रजापति तथा हिरण्यगर्भ नाम दिए गए। इसे ही उपनिषदों में परब्रह्म या विश्वात्मा कहा गया है।

पुरूष सूक्त में आधारभूत परम मौलिक ऊर्जा को परम पुरूष की संज्ञा देते हुए इसे सहस्त्र शीर्षा पुरूषः (10-90-1) अर्थात् इसे हजारों सिर, हजारों आँखें और हजारों पाँवोंवाला बताकर यह संकेत दिया गया है कि वह सर्वत्र उपस्थित है। इसी श्लोक में आगे कहा गया कि वह समस्त भूत जात प्रकृति को आच्छादित करके मनुष्य शरीर के दस अंगुलवाले स्थान अर्थात हृदय गुहा में स्थित है। यह पुरूष ही जगत है, जो पहले था और भविष्य में होगा। (ऋ10-90-2क)। इस पुरूष का एक चौथाई भाग दृश्य जगत-मृत्यु लोक के प्राणी हैं और उसका तीन चौथाई भाग अदृश्य स्वर्गवासी अमरों का लोक हैं (10-90-3 स)। अर्थात् जो सृष्टि हमें दिखाई दे रही है, वह उसका चतुर्थांश है, और तीन चतुर्थांश भाग अदृश्य जगत का भाग होकर समस्त भूत जात प्रकृति को घेरे हुए हैं। इसी परम पुरूष से ब्रह्माण्ड आदि की उत्पत्ति बताते हुए यह प्रतिपादित किया गया कि प्रकृति की दिव्य शक्तियाँ, पुरूष द्वारा प्रदत्त जगत रचना सामग्री द्वारा सृष्टि यज्ञ को विस्तारित करती हैं। अर्थात् सृष्टि में जो भी निरंतर क्रियाएँ और प्रतिक्रियाएँ हो रही हैं, उन्हें सृष्टि यज्ञ द्वारा प्रतिपादित किया गया है। इस प्रकार उसे आधारभूत परम मौलिक ऊर्जा से ब्रह्मांड और सृष्टि के विभिन्न घटकों की उत्पत्ति उस पुरूष के विभिन्न अंगों से बताते हुए। मनुष्य शरीर और ब्रह्मांड में समानता दिखाई गई है।

अशोक चिह्न में इसे इस प्रकार से दर्शाया गया है कि इसमें प्रदर्शित चार शेर और सामने से दृष्टिगत शेरों के चार पैर परम मौलिक ऊर्जा के चार अंशों का प्रतिनिधित्व करते हैं। किसी भी दिशा से सामने देखने पर शेरों के तीन मुँह और चार पैर ही दृष्टिगोचर होते हैं। जिससे यह तात्पर्य निकलता है कि इस मौलिक ऊर्जा के चार अंशों में से तीन अंश ऊपर उठकर आकाश में अवस्थित हैं, शेर के माध्यम से इस मौलिक ऊर्जा की अभिव्यक्ति इसे सर्वशक्तिमान प्रतिपादित करती है। अशोक चिह्न में शेरों के आधार पर स्थित पशु और चक्र, इस परम मौलिक ऊर्जा के एक अंश का प्रतीक होकर दृश्य जगत का भाग है। इसमें चिह्नित अश्व एवं गाय चैतन्य जगत का प्रतिनिधित्व करने के साथ, परम मौलिक ऊर्जा तथा प्रकृति को अभिव्यक्त करते हैं। इस ऋचा में परम मौलिक ऊर्जा से चैतन्य जगत की उत्पत्ति की ओर संकेत किया है कि उसी से अश्व तथा ऊपर और नीचे दोनों ओर दाँत वाले पशु उत्पन्न होते हैं। उसी से गायें उत्पन्न होती हैं तथा बकरी और वनस्पति भी उसी से उत्पन्न होते हैं। यहाँ अजावयः अजआवयः से तात्पर्य बकरी और वनस्पति से प्रतीत होता है। वेद में स्थूल रूप से महत्वपूर्ण पाँच पशु माने गए हैं, पुरूष, अश्व, गौ, अज ये प्रसिद्ध नाम हैं तथा अवि उस पशु प्राण का नाम हैं, जो वनस्पतियों को स्वपोषी बनाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि अशोक चिह्न में चैतन्य जगत को अश्व एवं गाय के द्वारा अभिव्यक्त किया गया है। इसका दूसरा महत्व एवं संकेत यह है कि वैदिक ज्ञान के अनुसार सृष्टि को प्रकृति-पुरूषात्मक अर्थात मैथुनी सृष्टि कहा गया है। अर्थात् प्रकृति के आधारभूत तत्व परम पुरूष (मौलिक ऊर्जा) से संयोग कर प्रकृति की विभिन्न शक्तियों और घटकों का निर्माण करती है और प्रकृति अस्तित्व में आती हैं। अशोक चिह्न में इस मैथुनी स्वभाव को अभिव्यक्त करने के लिए अश्व और गाय का उपयोग किया गया है। परम मौलिक ऊर्जा के ऊर्जावान गति स्वरूप को अश्व के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है, तथा चक्र के दूसरी ओर प्रकृति तथा प्रकृति की मातृवत् पोषण शक्ति को गाय के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है। आधारभूत मौलिक ऊर्जा और प्रकृति का संयुक्त प्रयास यह सृष्टि है। जो भूमि चक्र के रूप में कार्य कर रही है। इस सृष्टि चक्र को चक्र के माध्यम से मध्य में उत्कीर्ण किया गया है।

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

शिल्पी नेहा तिर्की
विधायक, मांडर विधनसभा

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

सन्नी टोप्पो
भाजपा युवा नेता मांडर
विधान सभा मांडर

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

राहुल कुमार
थाना प्रभारी मांडर

बिहार फाउंड्री एंड कास्टिंग्स लिमिटेड
BFCL
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक बधाई
एवं शुभकामनाएं
15TH AUG HAPPY INDEPENDENCE
Works : Ramgarh Industrial Area, P.O. Marar, Dist - Ramgarh, Jharkhand - 829117
Registered Office : Main Road, Ranchi, Jharkhand - 834001

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

जय प्रकाश एक्का
ओपी प्रभारी,
रहावन ,बोकारो।

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

झारखंड पुलिस मेंस एसोसिएशन
झारखंड , राँची।

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

अजीम अंसारी
थाना प्रभारी चान्हो

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

Chintpurni Steel Pvt Ltd
Jaiswal Colony, Ramgarh Cantt.-829122
Ph.:06553-222003, 226195
Email.:cspl2005@yahoo.com

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

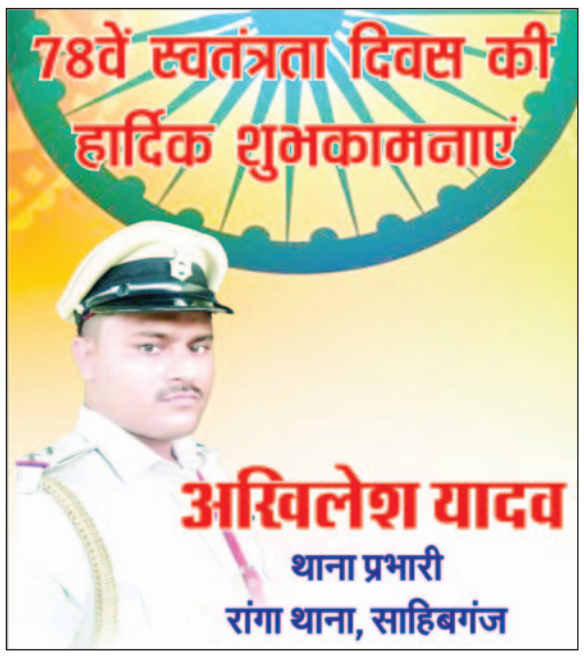

अखिलेश यादव
थाना प्रभारी
रांगा थाना, साहिबगंज

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

परमेश्वर उरांव
थाना प्रभारी टोकलो चाईबासा

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

महादेव उरांव
प्रधानाध्यपक चान्हो
सरना बाल विकास प्लस 2
उच्च विद्यालय पोड़ा टोली

बढ़ता विकास की ओर जगन्नाथपुर विधानसभा
क्षेत्र विधायक सोनाराम सिंकु के नेतृत्व में

78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

vedanta
transforming for good
ESL STEEL LIMITED

मिलकर
निर्माण
मिलकर
विकास

वेदांता, ईएसएल स्टील लिमिटेड और झारखंड
समृद्धि और राष्ट्र-निर्माण के भविष्य
के लिए एक साथ खड़े हैं।

#BULANDJHARKHAND

लक्ष्य FY25

2.3K महिला उद्यमिता
29.5K जल एवं स्वच्छता वाले घर
450 ACRES बंजर भूमि को खेती योग्य बनाना
4.5 MMT CO_2 कम करना
1.03K युवाओं को कुशल बनाना
4.6K शिक्षा
141.5K स्वास्थ्य देखभाल
18% लैंगिक विविधता

usha martin

Celebrating
77 Years
of Independence

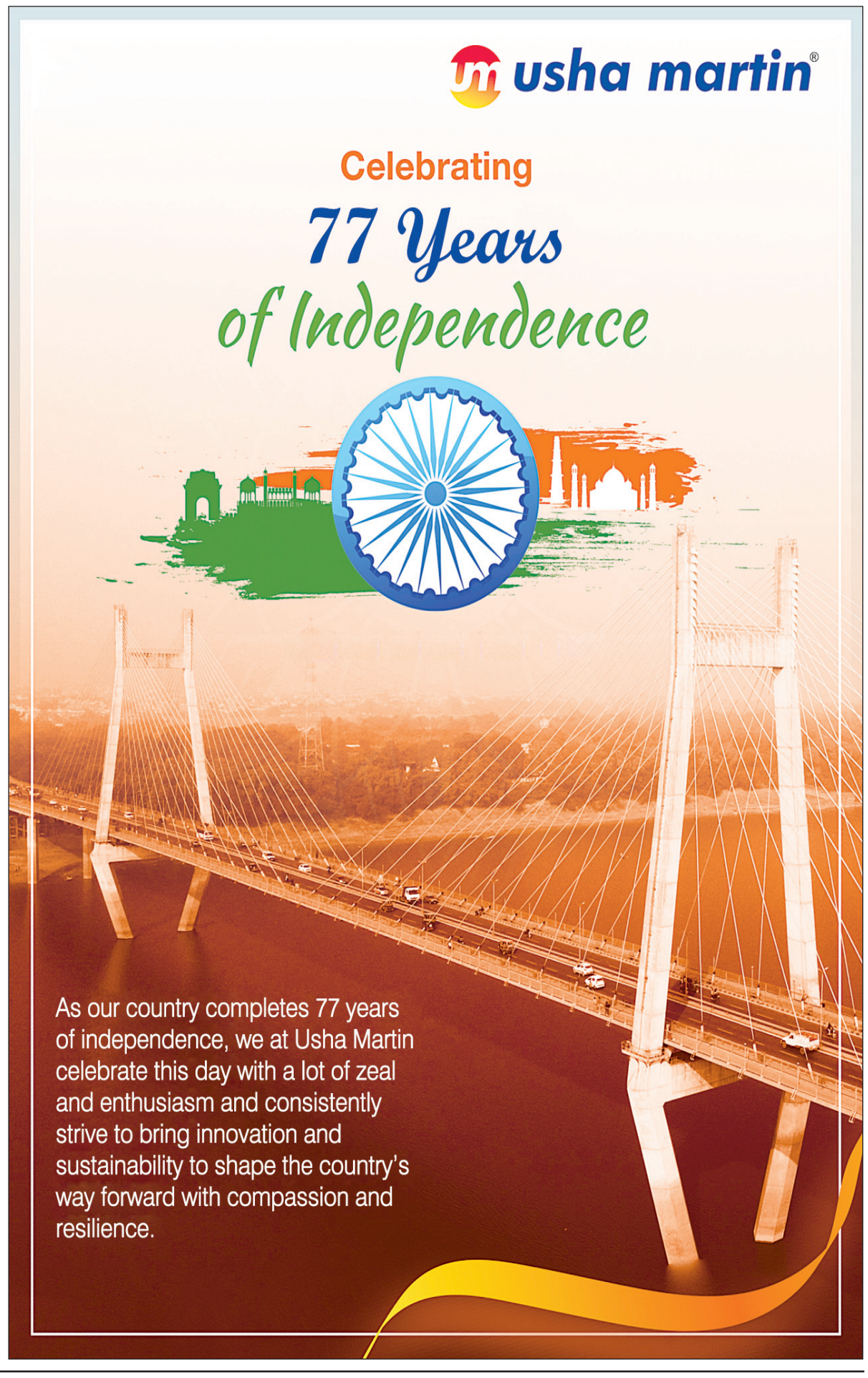

As our country completes 77 years of independence, we at Usha Martin celebrate this day with a lot of zeal and enthusiasm and consistently strive to bring innovation and sustainability to shape the country's way forward with compassion and resilience.

बिहान भारत की ओर से स्वात्वाधिकारी प्रकाशक एवं मुद्रक **संजय कुमार** के लिए वाटिका अपार्टमेंट,भोसले गली,हरिहर सिंह रोड,बरियातू,रांची-834009(झारखंड) दूरभाषः 7761060594, 7004767601 से प्रकाशित तथा शिवा साई पब्लिकेशन प्रा.लि., काठीटांड रातु, नियर टेंडर बगीचा, एचपी पेट्रोल पंप, रातु, रांची - 835222 झारखंड से मुद्रित। समस्त दीवानी विवाद, न्यायोचित कार्रवाई एवं दंडित परिवादो के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। **संपादक कविता साहू***पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार । Email-bihanbharat@gmail.com, bihanbharatranchinews@gmail.com